आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 20 | उदयपुर रविवार 01 नवम्बर 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

आभूषणों का वैज्ञानिक महत्त्व

- डॉ. शरदसिंह -

''आभूषण लोकसंस्कृति के लोकमान्य अंग हैं। सौंदर्य की बाहरी चमक-दमक से लेकर शील की भीतरी गुणवत्ता तक और व्यक्ति की वैयक्तिक रूचि से लेकर समाज की सांस्कृतिक चेतना तक आभूषणों का प्रभाव व्याप्त रहा है। आभूषणों के उपयोग का प्रभाव तन और मन दोनों पर पड़ता है। उनके धारण करने से शरीर का सौंदर्य ही नहीं वरन् स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता है। सौंदर्य-बोध में उचित समय पर उचित आभूषण पहनने का ज्ञान सम्मिलित है। जानकारों द्वारा शरीर-विज्ञान के आधार पर ही आभूषणों का चयन किया गया है।''

साहित्य शास्त्रियों ने आभूषणों के भेदोपभेदों का विशद वर्णन किया है। भरत ने अपनी काव्यशास्त्रीय कृति 'नाट्य शास्त्र' में चार प्रकार के आभूषणों का उल्लेख किया है-

(1) आवेध्य - जो छिद्र द्वारा पहने जाएं, जैसे कर्णफूल, बाली आदि।
(2) बन्धनीयम - जो बान्धकर पहने जाएं, जैसे बाजूबंद, पहुंची, शीशफूल आदि।
(3) प्रक्षेत्य - जिनमें कोई अंग डाल कर पहने जाएं, जैसे कड़ा, चूड़ी, मुंदरी।
(4) आरोप्प - जो किसी अंग में लटका कर पहने जाएं, जैसे हार, कण्ठमाला, चम्पाकली आदि।

आभूषण पहनने के पीछे वैज्ञानिक कारण महिला का शृंगार माथे की बिंदी से लेकर पांव में पहनी जाने वाली बिछिया तक होता है। इनमें हरएक चीज का अपना वैज्ञानिक महत्व है। इनको पहनने से शरीर पर सीधे रूप से सकारात्मक प्रभाव होता है। हिन्दू महिलाओं में अंगुलियों में अंगूठियां, हाथों में चूड़ियां, पैरों में पायजेब, नाक में लौंग, गले में मंगलसूत्र आदि पहनना कई लोगों को फैशन से ज्यादा और कुछ नहीं लगता होगा लेकिन अनेक विद्वानों का मानना है कि अंगूठी, माला, चूड़ियां, लौंग और पायजेब आदि के पीछे आर्थिक के साथ वैज्ञानिक कारण भी रहते हैं। जैसे मांग में टीका पहनने से मस्तिष्क सम्बन्धी क्रियाएं नियंत्रित तथा संतुलित रहती हैं एवं मस्तिष्क का विकार नष्ट होता है।

प्रचलित मान्यता के अनुसार कानों में झुमके, बालियां आदि पहनना फैशन ही नहीं, बल्कि शरीर पर एक्यूपंचर की तरह प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क के दोनों भागों को विद्युत से प्रभावशाली बनाने के लिए नाक और कान को छिदवाकर उसमें कोई भी धातु धारण करनी चाहिए। कान में कोई भी धातु धारण करने से मासिक धर्म नियमित होने में मदद मिलती है।

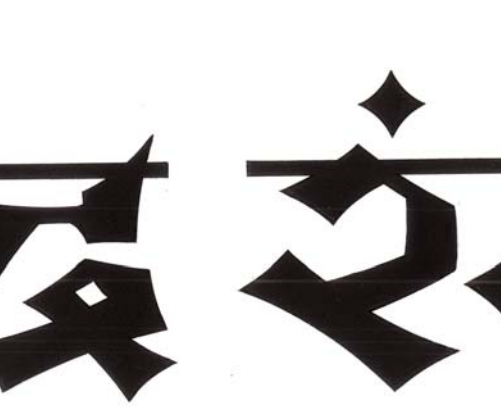

हिस्टीरिया व हर्निया नियंत्रित रहता लाभ कराता है। नाक छिदवाकर नथुनी या लौंग धारण करने से नासिका सम्बन्धी रोग जैसे कि श्वांस सम्बन्धी समस्या, सर्दी, खांसी में राहत मिलती है। शरीर को ऊर्जावान बनाने के लिए सोने के ईयररिंग और ज्यादा ऊर्जा को कम करने के लिए चांदी के ईयररिंग्स पहनने की सलाह दी जाती है।

विवाहित स्त्रियों का कांच की चूड़ियां पहनना शुभ माना जाता है। कांच में सात्विक और चैतन्य अंश मुख्य होते हैं। इस वजह से चूड़ियों के आपस में खनखनाने से जो आवाज पैदा होती है वह नकारात्मक ऊर्जा को दूर भगाती है।

हर अंगुली में अंगूठी का अलग-अलग प्रभाव होता है। हाथ की सबसे छोटी अंगुली में अंगूठी पहनने से छाती के दर्द व घबराहट से रक्षा होती है। इसके अलावा ज्वर, कफ, दम आदि बीमारियों से राहत मिलती है।

चांदी की पायजेब पहनने से पीठ, एड़ी, घुटनों के दर्द और हिस्टीरिया आदि रोगों से राहत मिलती है। चांदी की पायल हमेशा पैरों से लगी रहती है जो स्त्रियों की हड्डियों के लिए काफी फायदेमंद है। इससे उनके पैरों की हड्डी को मजबूती मिलती है। इसके अलावा पायल से उत्पन्न आवाज की तंरगें वातावरण से जब मिलती हैं तो वह स्त्री को नकारात्मक ऊर्जा से बचाती है।

पैर की जिन ऊंगलियों में बिछिया पहनी जाती है उसका सम्पर्क गर्भाशय और दिल से रहता है जो रक्तचाप को नियंत्रित रखती है। आमतौर पर बिछिया चांदी की होने की वजह से जमीन से जो ऊर्जा ग्रहण करती है वह पूरे शरीर तक पहुंचाती है जो स्त्री के भीतर ऊर्जा को उत्पन्न करती है। पायजेब की तरह ही चांदी की बिछिया भी स्त्री को हर प्रकार के नकारात्मक प्रभाव से दूर रखती है। चूड़ी कलाई की त्वचा से घर्षण करके हाथों में रक्त संचार बढ़ाती है। यह घर्षण ऊर्जा भी पैदा करता है थकान को जल्दी हावी नहीं होने देता। कलाई में गहने पहनने से श्वांस तथा हृदय रोग की सम्भावना घटती है। चूड़ी मानसिक संतुलन बनाने में सहायक होती है।

आभूषण लोकसंस्कृति के लोकमान्य अंग हैं। सौंदर्य की बाहरी चमक-दमक से लेकर शील की भीतरी गुणवत्ता तक और व्यक्ति की वैयक्तिक रूचि से लेकर समाज

की सांस्कृतिक चेतना तक आभूषणों का प्रभाव व्याप्त रहा है। आभूषणों के उपयोग का प्रभाव तन और मन दोनों पर पड़ता है।

उनके धारण करने से शरीर का सौंदर्य ही नहीं वरन् स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता था। सौंदर्य-बोध में उचित समय पर उचित आभूषण पहनने का ज्ञान सम्मिलित है। शरीर-विज्ञान के आधार पर ही आभूषणों का चयन किया गया है। पायल और कड़े धारण करने से एड़ी, टखनों और पीठ के निचले भाग में दर्द नहीं होता।

कमर में करधनी धारण करने से कमर में होने वाले दर्द से छुटकारा मिलता है। पहले भूमि पर बैठकर अनाज पीसने के लिए चक्की चलानी पड़ती थी, उस स्थिति में कमर पर बंधी करधनी मांसपेशियों में संतुलन बनाए रखती थी।

- डॉ. बहादुरसिंह परमार के संपादन में बुंदेली बसंत-2020 से साभार

इतिहास ग्रंथ गोरा बादिल चरित्र की अनुपम उपलब्धि

पहलीबार 16वीं शताब्दी में हेमरतन रचित राजस्थानी ऐतिहासिक काव्य की असल मूल प्रति का हिन्दी-अंग्रेजी में सुलभ संस्करण। सम्पादक : अक्षयकुमार देराश्री, समीक्षक डॉ. जे. के. ओझा

मेवाड़ राज्य का बनेड़ा ठिकाना शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर पर रहा है। इस छोटे से गांव में जो विभूतियां हुई हैं वे निश्चित ही आश्चर्यचकित करती हैं। महाराणा राजसिंह प्रथम के ज्येष्ठ पुत्र भीमसिंह द्वारा मेवाड़ का सिंहासन छोड़ने पर सिखवाल ब्राह्मण परिवार के केशवजी अपने पुत्र, पौत्र व प्रपौत्र सहित भीमसिंह के साथ बनेड़ा आये। अपनी असाधारण प्रतिभा, अकूत शौर्य तथा राजकाज के प्रति गहन निष्ठा से समय-समय पर यह परिवार राजगुरु, देवर्षि, पंडित जैसे विरुदों से अलंकृत हुआ।

सन् 1769 ई. में शिप्रा के युद्ध में इस परिवार के श्रेष्ठीवीरों ने बनेड़ा के राजा रायसिंह के शव को डेरा तक पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका दी फलत: उन्हें 'डेराश्री' की उपाधि से विभूषित किया गया। डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार कालान्तर में यही सम्बोधन डेराश्री से देराश्री बनकर उनके नाम के साथ गोत्र रूप में चर्चित हो गया।

प्रस्तुत अलभ्य ऐतिहासिक कृति के सम्बन्ध में इतिहासज्ञ डॉ. मोहब्बतसिंह राठौड़ ने लिखा- ''यह ग्रन्थ हेमरतन विरचित गोरा बादल (बादिल) चरित्र की हस्तलिखित प्रति, सम्पादक अक्षयकुमार देराश्री ने अपने पिताश्री मिनिस्टर रविशंकरजी देराश्री द्वारा लेखक हेमरतन के हस्ताक्षर से संरक्षित मूल प्रति से

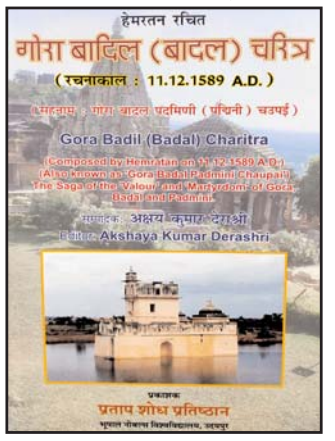

सम्पादित कर प्रकाशित कराया है। इतिहास क्षेत्र की निसन्देह यह एक अद्‌भुत घटना है।

इस चरित काव्य की रचना वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के यशस्वी मंत्री भामाशाह के छोटे भ्राता ताराचन्द की आज्ञा से मार्गशीर्ष शुक्ल 15 विक्रम संवत् 1646, गुरूवार 11 दिसम्बर सन् 1589 को पूर्ण हुई। इसमें वर्णित कई घटनाओं का विवरण ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वमान्य स्वीकार्य हुआ है।

ग्रन्थ में पद्‌मिनी की गरिमा, विवेक व सतीत्व के साथ चित्तौड़ के प्रथम साका के नायक परमवीर एवं असाधारण रणनीतिकार बादल की गाथा का सांगोपांग चित्रण है। विद्वान सम्पादक ने राजस्थानी के इस उत्कृष्ट काव्य ग्रन्थ के सुललित सम्पादन द्वारा हिन्दी के साथ उत्कृष्ट अंग्रेजी अनुवाद कर इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक सुलभ कराने का प्रशंसनीय भगीरथ प्रयत्न किया है।''

अक्षयकुमारजी ने ग्रन्थ की मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए उसका बारीकी से अध्ययन कर एक-एक अक्षर तथा हस्व-दीर्घ की मात्राओं का ध्यान रखते हुए जो कार्य किया है वह शोधक्षेत्र में कार्य करने वालों का प्रेरक बन नई दृष्टि देगा। ग्रन्थ को सात खण्डों में विभाजित कर असामान्य शब्दों को बारीकी से छानबीन कर विश्लेषित किया है। विद्वानों की मान्यताओं को गहन एवं गम्भीर अध्ययन के पश्चात निश्चित निर्णायक स्थिति पर पहुंचाने का प्रयास किया है।

आकर्षक छपाई तथा सम्बन्धित छायाचित्र ग्रन्थ की सामग्री से मेल खाते हुए हैं। कुल 436 पृष्ठों में प्रताप शोध प्रतिष्ठान, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा प्रकाशित एवं राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से छपित 500 रूपये मूल्य का यह ग्रन्थ इतिहास की एक अनुपम धरोहर है।

शिक्षा-क्षेत्र में डॉ. चित्रलेखा सिंह की अनूठी उपलब्धियां

- डॉ. कहानी भानावत -

उपलब्धियां अर्जित करने के लिए अनेकानेक क्षेत्र हैं। जीवन में संकल्पबद्ध निरन्तर आगे बढ़ने का सार्थक प्रयास स्वत: ही सफलता के पायदान बिछाता दृष्टिगोचर होता है। ऐसे में डॉ. चित्रलेखा सिंह हमारे लिए अनूठी उपलब्धियों की बेजोड़ मिशाल ही हैं।

यों तो डॉ. चित्रलेखा सिंह की उपलब्धियों के विविध क्षेत्र हैं किन्तु शिक्षा-क्षेत्र में उनके मानदण्ड अतुलनीय ही रहे हैं। वे विश्व की पहली महिला डी. लिट् उपाधि धारक हैं। आगरा के आगरा कॉलेज में रह उन्होंने फाईन आर्ट्स विभाग में व्याख्याता के पद से अपनी सेवा प्रारम्भ कर रीडर तथा अध्यक्ष पद प्राप्त करते अनेक विद्यार्थियों को अपने निर्देशन में शोधानुसंधान कराया। 60 को पीएच. डी. एवं 250 को एम. फिल. कराई।

एक सधी हुई चित्रकार के रूप में भी उन्होंने अपना नाम सार्थक करते हुए अनेक ऐसे चित्रों का सृजन किया जिनके माध्यम से उनकी एकल तथा समूह प्रदर्शनियां हुईं। उसी के फलस्वरूप भारत के अलावा बंगलादेश, होलेण्ड, जर्मनी, नाइजेरिया, रोम, अमेरिका तथा कनाडा में उनके चित्रों का सगर्व संग्रह सुरक्षित है। अपनी चित्रवीथिका के माध्यम से वसुधैव कुटुम्बकम् की भारतीयता का आदर्शजनित महान पावन शान्ति सन्देश प्रसारित करने इटली, मोरिशस, चीन, अमेरिका, कनाड़ा, पाकिस्तान, नेपाल तथा श्रीलंका की यात्राएं उनकी अनेक उपलब्धियों का स्मरणीय कोष कही जाती हैं।

डॉ. चित्रलेखा ने लेखन-क्षेत्र में भी कम उपलब्धियां अर्जित नहीं कीं। उनकी लिखी डेढ़ दर्जन पुस्तकें प्रकाशित होकर बहुचर्चित एवं प्रशंसित हुईं और लगभग इतनी ही पाण्डुलिपियां प्रकाशन की प्रतीक्षा लिये हैं।

अनेक उत्कृष्ट सम्मानों एवं पुरस्कारों की धनी डॉ. चित्रलेखा एनसीसी ऑफिसर के रूप में भी अपनी उत्कृष्ट पैठ लिये हैं। अनेक समाज तथा संस्थाओं ने उन्हें अपने साथ सम्बद्ध कर गौरव अर्जित किया। आठवें दशक के इस पड़ाव में भी वे उतनी ही सक्रिय, स्फूर्त तथा अथक बनी कर्मशील कीर्तिवान बनी हुई हैं।

सखियों की बाड़ी को मिले तीन राष्ट्रीय पुरस्कार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। बालिका साक्षरता कार्यक्रमों में से एक 'सखियों की बाड़ी' का संचालन करने वाले आईआईएफएल फाउंडेशन को राजस्थान में पिछले तीन वर्षों के दौरान 36,000 से अधिक लड़कियों को स्कूली शिक्षा से जोड़ने में कामयाबी हासिल हुई है। गत दिनों 'सखियों की बाड़ी' कार्यक्रम ने चौथे वर्ष में कदम रखा।

इस अवसर पर सीएसआर और सस्टेनबिलिटी में एक्सीलेंस के लिए 'सखियों की बाड़ी' कार्यक्रम को मिले तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों का जश्न मनाया गया। आईआईएफएल फाउंडेशन को 'आउटस्टैंडिंग कंट्रीब्यूशन टू द कॉज ऑफ एजुकेशन' पुरस्कार, सखियों की बाड़ी को 'बेस्ट सीएसआर इम्पैक्ट इनिशिएटिव' तथा आईआईएफएल फाउंडेशन की डायरेक्टर सुश्री मधु जैन को 'सीएसआर लीडरशिप अवार्ड' मिला।

सुंदर भानावत की स्मृति में मोक्षरथ भेंट

कानोड़ के शिक्षा-समाजसेवी सुन्दरलाल भानावत का 02 अक्टूबर को असामयिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में उनके परिवारजन मनोज भानावत तथा अभय बाबेल ने बताया कि कानोड़ में सर्व समाज के लिए एक मोक्षरथ भेंट करने का निश्चय किया है।

उदयपुर में कानोड़ मित्र मण्डल के अध्यक्ष हिमांशुराय नागोरी ने बताया कि कानोड़ जैसे बड़े कस्बे में लम्बे समय से इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही थी। नगरवासियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सर्व जन हिताय इस निर्णय से भानावत परिवार की भूरि-भूरि प्रशंसा करते आभार जताया। मृत्युपरान्त सामाजिक रूढ़ियों के रहते बहुत सारे कार्यों में धन-व्यय के उदाहरण मिलते हैं। उसकी बजाय जिनहितकारी ऐसे कार्य सभी के लिए आदर्श हैं जो स्थायी महत्त्व के हैं और स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी हैं। **-सोहन भानावत**

त्रिधारा के सुविज्ञ डॉ. राजशेखर नहीं रहे

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जाने-माने शिक्षा शास्त्री, इतिहासवेत्ता तथा ध्रुपद रूद्र वीणा के पंडित डॉ. राजशेखर व्यास का 08 अक्टूबर को निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा सुशिक्षित एवं सुविज्ञ परिवार छोड़ गये। डॉ. व्यास को शोकांजलि देते डॉ. गिरीशनाथ माथुर, डॉ. देव कोठारी, डॉ. जे. के. ओझा, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. छगनलाल बोहरा एवं डॉ. तुक्तक भानावत ने कहा कि डॉ. व्यास ने विभिन्न सरकारी पदों पर रहते अपनी उच्च कर्मशील कठोर भूमिका से सभी को प्रभावित करते सम्मानजनक यशप्रियता प्राप्त की।

प्रतिभापुंज नरेंद्र मेघवाल ब्रह्मलीन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान, जयपुर के पूर्व संयुक्त निदेशक पन्नालाल मेघवाल के अनुसार नरेन्द्र मेघवाल का जन्म 17 अप्रैल 1976 को गोदाना (झाड़ोल) में हुआ। काल के क्रूर क्षण ने 18 अक्टूबर को 42 वर्ष की अल्पायु में उन्हें असमय ब्रह्मलीन कर दिया। अब तो उनकी प्रतिभा, कार्यकुशलता, सहनशीलता एवं सद्‌भाव की स्मृतियां शेष रह गई हैं। नरेन्द्र 1 मई 2003 से 9 दिसंबर 2010 तक आर. के. एंटरप्राइजेज, राजसमंद एवं कटनी में आई.टी. सेल के प्रभारी रहे। उन्होंने वाणिज्य कर विभाग, उदयपुर में कर सहायक के पद पर कार्य किया। नरेंद्र गणित, विज्ञान एवं कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के विशेषज्ञ थे।

शिक्षाविद् डॉ. राठौड़ का निधन

उदयपुर (का. सं.)। प्रख्यात शिक्षाविद्, सुलझे साहित्यकार एवं समाजभूषण डॉ. ओंकार सिंह राठौड़ का 85 वर्ष की उम्र में असामयिक निधन हो गया। उनका जन्म 31 जुलाई 1935 को राजसमंद जिले के सुप्रसिद्ध केलवा ठिकाने में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वहीं के रावले में हुई। तत्पश्चात उदयपुर के भूपाल नोबल्स संस्थान में स्कूली शिक्षा प्राप्त कर वहीं एग्रीकल्चर कॉलेज से बीएससी कर अमेरिका के ओहायो विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। तदनंतर उदयपुर लौटकर एग्रीकल्चर कॉलेज में अध्यापन कार्य करते हुये इस क्षेत्र में विशेषज्ञ के रूप में अपनी पहचान बनाई।

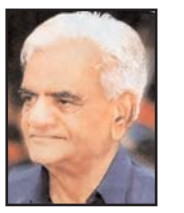

इतिहास एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में अपनी पैठ कायम करने वाले डॉ. राठौड़ वर्षों तक विद्या प्रचारिणी सभा के उपाध्यक्ष रहे। ठा. रामसिंह इनके दादा थे जो केलवा के प्रथम सरपंच और मेवाड़ में महेन्द्र राज सभा के सम्मानित सदस्य रहे। उन्हीं के सुयोग्य मार्गदर्शन में डॉ. राठौड़ पल्लवित पोषित एवं सुसंस्कारी बने। उदयपुर में रहते हुए अपने परिवारजनों को उच्च शिक्षण प्रदान कर समाजसेवा की बहुआयामी प्रवृत्तियों की प्रेरणा देते हुए उन्होंने स्वयं इतिहास के क्षेत्र में साहित्य सृजन किया। उनका संपर्क अनेक विद्वानों, साहित्यजनों एवं ख्यात मनीषियों से रहा। वे निरंतर उनसे संवाद करते हुए अपने यहां भी उन्हें आमंत्रित कर अनेक विचार गोष्ठियां, संगोष्ठियां तथा साहित्यिक परामर्श का आदान-प्रदान करते रहे। उनके निधन से राजस्थान के इतिहास, साहित्य, संस्कृति तथा पर्यटन क्षेत्र के लिए अपूरणीय क्षति है जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति असंभव ही लगती है।

तामीर सोसायटी के डॉ. इकबाल सागर, युगधारा के डॉ. ज्योतिपुंज, सम्प्रति संस्थान के डॉ. तुक्तक भानावत के अलावा डॉ. जे. के. ओझा, डॉ. गिरीशनाथ माथुर, डॉ. महेन्द्र भानावत, प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़, डॉ. दिलीप धींग ने श्री राठौड़ के निधन पर शोक व्यक्त करते कहा कि कृषि-विशारद होने के साथ-साथ ही वे खानदानी परंपरा का निर्वाह करते साहित्य के गुणज्ञों, रसिकों, विद्वानों तथा शोधकरणियों के प्रति सम्मान भाव रखते उन्हें अपने यहां आमंत्रित कर सम्मानजनक आतिथ्य करने, विचार विनीमय करने और नियमित बैठक करने में विशेष रूचि रखते थे।

समय आने पर चुपचाप आर्थिक सहयोग करने में भी वे सदैव आगे रहते थे। ऐसे हेतालू और ममतालू मनीस्वी सामंती मेवाड़ी संस्कृति के इतिहास की जूनी बातों को रसिकता के साथ प्रस्तुत करने वाले एक सुदृढ़ स्तंभ के रूप में आने वाली पीढ़ी में भी वे सदा चर्चित रहेंगे।

स्मृतियों के शिखर (110) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जहां मुझे लोककला की आँख-पाँख मिली

पूरे देश में राजस्थान ही वह पहला प्रांत है जिसने सर्वप्रथम लोककलाओं के महत्व को समझा। उनके उन्नयन का बीड़ा उठाया। उनके विकास और प्रचार-प्रसार का जिम्मा लिया। लोक कलाकारों की सुध ली। उन्हें सम्मानजनक प्रदर्शन-मंच दिया। उनकी कला को प्रोत्साहन दिया। उनकी पहचान बनाई। विशिष्ट प्रतिष्ठा और राजकीय सम्मान दिया। लोककलाओं का सर्वेक्षण, अध्ययन, लेखन, प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हुआ। लोककला संस्थाएं शुरू हुईं। लोककला विषयक पत्र-पत्रिकाएं निकाली गईं। विविध समारोह और संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने पारम्परिक कलाओं के महत्व को समझा। कई अज्ञात कला-विधाएं पुनर्प्रतिष्ठित हुईं। अल्पज्ञात को पुनर्जीवन मिला और कलाकारों ने यह समझा कि उनके घरों में जो परम्परागत कलाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित होती आई हैं वे महत्वपूर्ण तथा मूलवान हैं। उनकी चमक फीकी नहीं होने देनी है। वे हेय नहीं, गेय हैं। लुप्त, गुप्त तथा समाधि देने वाली नहीं, अपितु दर्शनीय एवं प्रदर्शनीय हैं।

वे लोकधर्मी हैं अत: जीवनधारा की प्रबल आधार तथा हमारी अन्तश्चेतना की संजीवनी हैं। इसलिए राजस्थान को लोककलाओं का अलमबरदार कहा गया है। लोककलाओं की जो विविधता तथा उनमें निहित जीवनरसता यहां मिलती है, वह अन्यत्र नहीं मिलेगी। इसीलिए यह प्रांत लोककलाओं का अजूबा अजायबघर भी कहा गया है। यहां के लोकरंगी वैभव, परम्पराशील रंगदर्शन और उल्लसित होते जन-मन-रंजन के अप्रतिम उमाव, अद्भुत आनन्द तथा अकूत उत्साह को देखकर ही तो पं. जवाहरलाल नेहरू ने इसे रंगों का प्रदेश कहा।

इन लोककलाओं के उन्नायक-सूत्रधार थे देवीलाल सामर जिन्होंने लोककला जैसी अप्रौढ़ और जंगली समझी जाने वाली विधा के उन्नयन का न केवल सपना देखा अपितु उसे अपनी आंखों से साकार होता हुआ भी देखा। यह सपना था लोककलाओं और उनसे जुड़े कलाकारों को समाज में उचित सम्मान और प्रतिष्ठा दिलाने का, देश के सांस्कृतिक विकास में लोककलाओं की आधारभूत भूमिका की स्वस्थ समझ और सुविचारित चिंतन का, शिक्षण को सर्वव्यापी बनाने के लिए उसमें लोकानुरंजनकारी लोकशिक्षण के प्रवेश का, शिक्षालयों तथा विश्वविद्यालयों में लोकसाहित्य के पठन-पाठन का, लोकनृत्यों का मुख उज्ज्वल होने का, लोकगायन-वादन को समुचित दर्जा दिलाने का, कठपुतलियों में छिपे कला प्रयोजन को विश्वमंच देने का, पिछड़े, दलित, अनपढ़ और हीन समझे जाने वाले कलाकारों और उनकी कला-चेतना को अंचल से अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश तथा पहचान देने का, परित्यक्त जातियों और उनकी कलाओं को राष्ट्रीय सम्मान देने का, लोककलाओं को रज से रजत बनाने का।

इनके लिए देवीलाल सामर ने उदयपुर में 22 फरवरी 1952 को भारतीय लोककला मण्डल नामक संस्था की स्थापना की। पिछड़ी और अछूती समझी जाने वाली जातियों के साथ जुड़ने और उनके नृत्य-गीतों को अपनाने वाले सामरजी स्वयं अपनी बनिया जाति में तिरस्कार के शिकार हुए। अन्यों ने भी उन्हें सुख नहीं दिया। नाथद्वारा के श्रीनाथजी मन्दिर में तो उनका प्रवेश ही रोक दिया गया, लेकिन सामरजी निराश और हताश नहीं हुए। धीरे-धीरे लोगों ने उनके कार्य को समझा और सराहा भी। राजस्थान सरकार का ध्यान भी इस ओर गया।

मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास बड़े कलापारखी थे। वे अच्छा और उपयोगी काम करने वालों के प्रशंसक, हमदर्द और पृष्ठपोषक थे। खुद भी नाच के शौकीन थे। उन्होंने जब सामरजी को अपना बोझा ढोते, गांव-गांव भटकते, कलाकारों को खोजते देखा तो कहा कि जहां मैं दौरे पर जाता हूं वहां मेरे साथ चलो। सामरजी उनके साथ हो लिये। दौरों के दौरान सामरजी को राजस्थान का पूरा आभास और उसकी समस्त कलात्मक धरोहर को नजदीक से देखने का सुअवसर हाथ लग गया। यही नहीं, व्यासजी ने अपने निजी फंड से पांच हजार रूपये का अनुदान भी दिया। तब यह बहुत बड़ी राशि थी। कल्पनातीत सहयोग था। सामरजी का गाड़ा दौड़ पड़ा।

फिर तो राजस्थान समाज कल्याण विभाग ने भी मदद की। राजस्थान की पिछड़ी जातियों के सांस्कृतिक सर्वेक्षण का काम दिया। भील जीवन पर 'कुदरत के लाड़ले', घुमक्कड़ जातियों पर 'संस्कृति के रखवारे' नामक वृत्तचित्र बने। राजस्थान के लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकसंगीत, लोकोत्सव तथा लोकानुरंजन पर पुस्तकें छपीं। सरकार के सहयोग से ही पहलीबार अखिल राजस्थान लोकगीत समारोह (1953) शुरू किया गया। उदयपुर के मोहता

सामरजी के साथ डॉ. भानावत

पार्क में आयोजित इस समारोह की स्वर लहरियां सुनने वालों के कान अब भी थके नहीं हैं। ऐसा ही लोकनृत्य समारोह (1956) और लोकसंगीत और लोकानुरंजन समारोह (1957) हुआ।

कला मण्डल के माध्यम से राजस्थान विकास विभाग ने उदयपुर के सन्निकट बेदला गांव में अखिल राजस्थान लोककलाकार प्रशिक्षण शिविर (1958) आयोजित किया।

एक-एक पखवाड़े के कुल चार शिविर हुए जिनमें राजस्थान के अच्छे-उम्दे विविध कलारूपों में निष्णात कलाकार सम्मिलित हुए। तब मैं कला मण्डल में आया ही आया था और सामरजी ने अपने निर्देशन में इस शिविर का मुझे संयोजन ही दे दिया। राजस्थान का ही नहीं, बल्कि पूरे देश का, यह पहला ऐसा लोककलाकारों के प्रशिक्षण का शिविर था जिसमें लोककलाकारों द्वारा अपने-अपने रंग-ढंग से दिये जा रहे प्रदर्शनों की मूल आत्मा को बनाये रखते हुए उन्हें जनरूचि के अनुकूल बनाया गया।

ऐसे प्रशिक्षित कलाकारों का एक समारोह रखा गया जिसमें राजसमन्द के केलवा गांव के बहुरूपिया परसराम को सर्वश्रेष्ठ कलाकार घोषित कर राज्य सरकार द्वारा सांस्कृतिक अधिकारी का जन सम्बोधन सम्मान प्रदान किया गया। इसी शिविर में जीजोट के नाथू भाट के कठपुतली दल से पारम्परिक कठपुतली शिल्प में ही कला मंडल द्वारा मुगल दरबार नाटिका की रचना की गई जिसका पहला प्रदर्शन नागौर में 02 अक्टूबर 1959 को पंचायत राज के शुभारम्भ पर पं. जवाहरलाल नेहरू के समक्ष किया गया।

ऐसे ही सामरजी द्वारा अखिल भारतीय कठपुतली समारोह (1959 तथा 1964), अखिल भारतीय लोककला संगोष्ठी (1972 तथा 1978), राजस्थान बाल कठपुतली समारोह (1976 तथा 1977) तथा कला मण्डल की रजत जयंती पर लोकानुरंजन मेला (1978) आयोजित किया गया। प्रवासी राजस्थानियों के लिए मुम्बई में रंगीला राजस्थान समारोह (1960) किया गया। उदयपुर में ही 1967 के गणतंत्र दिवस समारोह में कला मण्डल के प्रयास तथा प्रशिक्षण द्वारा 600 बालिकाओं द्वारा घूमर नृत्य का प्रदर्शन और दिल्ली के गणतंत्र दिवस समारोह की परेड में राजस्थान की घूमर नामित झांकी सर्वोत्कृष्ट घोषित हो सराही गई।

राजस्थान दिवस (1954) पर सामरजी ने अपने कलाकारों द्वारा चम्बल नृत्यनाटिका का प्रदर्शन जयपुर में मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास के समक्ष किया। दिल्ली में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के समक्ष रासधारी नृत्यनाटिका प्रस्तुत की गई। ये सारे कार्यक्रम न केवल राजस्थान में, अपितु पूरे देश में पहलीबार सर्वप्रथम हुए। जयपुर में जब पहलीबार आकाशवाणी केन्द्र का शुभारम्भ हुआ तो सामरजी ने न केवल लोककलाकारों की सूची भेजी, अपितु कला मंडल की लोकगायिका नारायणीदेवी, जानकीदेवी को प्रस्तुत किया।

लोककला मण्डल में 1953 में ही लोककला संग्रहालय प्रारम्भ कर दिया गया। यहीं से 'लोककला' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। सन् 1965 का वर्ष कितना स्मरणीय हो गया जब बुखारेस्ट में हुए तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में सामरजी ने मात्र अपने तीन कलाकारों के साथ भारत का प्रतिनिधित्व किया और विश्व का प्रथम पुरस्कार अर्जित किया।

तबसे भारत, राजस्थान कठपुतली कला का सिरमौर ही नहीं, इस कला की जन्मस्थली के रूप में भी ख्यात-प्रख्यात बना विश्व-विभूषित है। आज राजस्थान की पड़, कावड़ तथा भवाई, तेराताली, कच्छीघोड़ी, चकरीनृत्य की जो पहचान विश्वव्यापी हुई मिलती है उसके पीछे सामरजी की सूझबूझ और कलादृष्टि का बहुत बड़ा हाथ है। सरकार के तो बड़े हाथ हैं ही।

राज्य सरकार द्वारा स्थापित संगीत नाटक अकादमी (जोधपुर) का योगदान भी लोककला संरक्षण का पूरा अध्याय है जिसके माध्यम से मुख्यत: रेगिस्तानी इलाके के लंगा, मांगणियार समुदाय में प्रचलित लोकसंगीत तथा गायक एवं वादक कलाकार खोजे गए। उन्हें प्रतिष्ठाजनक मंच मिला, प्रोत्साहन मिला। जो कलाकार पीढ़ियों से अपने ही क्षेत्र के यजमानों के आश्रित बने हुए थे उन्हें राजस्थान का परिभ्रमण ही नहीं, पूरे देश तथा विदेश में जो मान और सम्मान मिला वह अद्भुत, अकल्पनीय और अनिर्वचनीय ही कहा जायेगा।

खड़ताल वादक सिद्दीक को पद्मश्री मिलना और कोहिनूर बालक का खड़ताल नर्तक के रूप में सबकी आंखों का सितारा बनना अंधेरी गुप्प अनाम बस्तियों में यकायक रोशनी का रथ घुमना है। भजन गायिका सोहनीदेवी की स्वर-लहरियों ने तो सिनेमा तक को प्रभावित किया। 'केसरिया बालम' गीत की अमर गायिका के रूप में पद्मश्री अल्लाजिलाईबाई का 'पधारो म्हारे देस' हेला तो राजस्थान आमंत्रण का शीर्षस्थ सिम्बोलिक रेला ही बन गया। कालबेलिया नर्तकी गुलाबो के भाग्य का क्या कहना? उसकी लोकप्रियता के चलते जगह-जगह डुप्लीकेट गुलाबों से भी मेरा साक्षात्कार हुआ।

किसको पता था कि छोटे-छोटे गांव और वहां की कलाएं जग विख्यात हो जायेंगी। बसी की काष्ठकला हो या शाहपुरा-भीलवाड़ा की पड़ कला। मोलेला की लोकदेवी-देवताओं की मिट्टी की मूर्तिकला, बीकानेर की उस्ता कला हो या फिर प्रतापगढ़ की थेवा कला, आकोला, सांगानेर, बगरू की छपाई कला हो या जयपुर की जूतियां, उदयपुर के काष्ठ निर्मित खिलौने, बूंदी के लाख के चूड़े, अपनी पहचान बनाकर राजस्थान को रौनक देंगे।

राज्य सरकार द्वारा हर वर्ष उत्कृष्ट एवं बेजोड़ कलाधारक हस्तशिल्पियों को पुरस्कृत करने से निश्चय ही यहां की खोई-सोई कला पुनर्जाग्रत एवं जीवन्त हुई है। गुदनें, मेहंदी, सांझी तथा माण्डनों की कला तो न जाने कितने ओर-छोर नाप चुकी है।

सामरजी से प्रेरणा लेकर भीलवाड़ा में निहाल अजमेरा ने गैर समारोह शुरू किया तो कई गांवों की विविध गैर विधाएं जाग उठीं। होली त्यौहार की रंगीनियां बढ़ने लगीं। खिलाड़ियों में जोश आया। ऐसा ही एक समारोह बाड़मेर के कनाना गांव में मगराज जैन ने प्रारम्भ किया। इसकी हवा विदेशों तक पहुंची। जैसलमेर में नन्दकिशोर शर्मा ने लोककला संग्रहालय प्रारम्भ किया जिससे उधर की लोकसमृद्ध धरोहर को संरक्षण मिला।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 नवम्बर 2020

सम्पादकीय

देश की औसत उम्र में इज़ाफा

कोराना काल में हमारे लिए यह सकारात्मक शकुन भरी खबर है कि देश में भारतीयों की औसत उम्र में बढ़ोतरी हो गई है। लैंसेट जर्नल ने यह खुलासा कर 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' मिशन को पुष्ट करने का सम्बल दिया है।

अध्ययनकर्ताओं में इंडियन इन्स्टीट्युट ऑफ पब्लिक हेल्थ गांधीनगर के श्रीनिवास गोली ने बताया कि इस अध्ययन में विश्व के 204 देश में मौतों के होने वाले 286 से भी अधिक कारणों एवं 369 बीमारियों का पता लगाकर गहन निष्कर्ष निकाला गया।

इसके अनुसार हमारे देश में पिछले 30 वर्षों में लोगों की औसत उम्र में 10 वर्ष की वृद्धि हुई है। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो सन् 1990 में देशवासियों की औसत उम्र 59.6 थी जो 2019 में बढ़ते 70.8 हो गई। संक्रामक रोगों में कमी देखी गई जबकि क्रॉनिक बीमारियों में बढ़ोतरी हुई है।

बीमारियों को लेकर और भी जो तथ्य हाथ लगे हैं। उनके अनुसार गर्भावस्था तथा प्रसव के दौरान होने वाली मृत्युदर में कमी आई है पर हार्ट अटैक और कैंसर जैसे रोगों ने बढ़त ली है। माताओं और शिशुओं के कुपोषण में भी कोई कमी नहीं आकर हालात जस के तस बने हुए हैं। सन् 2019 को ही लें तो देश में अधिकांश मौतों के प्रमुख कारण वायु प्रदूषण, हाई ब्लड प्रेशर, तम्बाकू सेवन, अपर्याप्त भोजन तथा हाई ब्लड शुगर रहे हैं।

दैनिक भास्कर के 17 अक्टूबर 2020 के अंक में दी गई यह खबर हमें गम्भीरतापूर्वक सोचने, समझने तथा अपने स्वास्थ्य के प्रति सजगता बनाये रखने की दिशा में आममय इमलीदार चेतावनी का चूंगट्या देती है।

काल का चक्र कभी स्थिर नहीं रहकर चलायमान होता है। मनुष्य विभिन्न युग पार करते वर्तमान कलियुग का द्रष्टा बना हुआ है। सतयुग हमने नहीं देखा पर सुना है। उसका आंखों भोगा हाल युग-दर-युग जीते, चलते व्यक्ति ने अपनी बाद की पीढ़ी को हस्तांतरित किया है। यह किसी शास्त्र किंवा साहित्य में दर्ज नहीं है। कण्ठासीन यात्री के रूप में कैसे सुरक्षित होकर अमिट बना हुआ है, यह कम अचरज नहीं है।

गायक जातियां आस्था, विश्वास तथा अपनी विराट धरोहर को विरासत के रूप में जीवित रखने की अदम्य लालसा-उत्कण्ठा के कारण वह गायकी आज भी गतिशील है जिसे डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा संग्रहीत किया गया। उनके अनुसार आदिवासी भीली समाज द्वारा प्रदर्शित गवरी नृत्यानुष्ठान में रात्रि जागरण पर पाण्डवों की गाथा 'भारत' के समूह गान में वर्णित सतयुग का वर्णन द्रष्टव्य है।

उसके अनुसार सतयुग में आदमी की औसत उम्र एक हजार वर्ष होती थी। सौ वर्ष का शिशु तो पालने में झूलता। तीन सौ वर्ष की उम्र में विवाह किया जाता। नर-नारी का आपसी भोग नहीं होकर दृष्टि-फल के रूप में सन्तान पैदा होती। कोई झूठ नहीं बोलता। पंडित ब्राह्मण ही भिक्षा लाते। ग्याभिन घोड़ी पर जीण नहीं पलाणा जाता तो कोई सवारी भी नहीं करता। कुंवारी कन्या चूड़ा धारण नहीं करती। अन्न में जौ-मक्का एक साथ पकते। मनुष्य की औसत ऊंचाई पांच हाथ होती।

मनुष्य की सामर्थ्य को कोई आंक नहीं पाया। उसकी साधना के अनेक रहस्य हैं। उन रहस्यों तक किसी का पहुंचना और जानना फिलहाल तो असम्भव, नितान्त असम्भव ही है।

मन की कचोट

उस समय मेरा मन मुझे बहुत कचोटता है
जब मैं किसी गुणी का गुण-गान नहीं करता हूं
किसी पूज्य को प्रणाम नहीं करता हूं
किसी उपकारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं करता हूं
किसी प्रकाश की ओर पीठ कर लेता हूं
किसी अन्याय को सह जाता हूं
किसी विश्वास को ठेस पहुंचाता हूं
किसी जिज्ञासा को गुमराह करता हूं
किसी गलती को सही साबित करता हूं
किसी मजबूरी का अनुचित लाभ उठाता हूं
किसी अयोग्य की चमचागीरी करता हूं
किसी अमूल्य क्षण का दुरुपयोग करता हूं
तब जीवन जी कर भी जैसे रीता सा लगता है।

-शासनश्री मुनि सुखलाल

आदिवासी : धार्मिक मान्यताएं और विश्वास

-डॉ. सोहनलाल पटनी-

आदिवासी भील और गरासिया जातियां मूलत: हिन्दू जातियां हैं अत: इनके धार्मिक विश्वास एवं देवी-देवता भी हिन्दुओं के ही हैं। दोनों ही जाति के लोग शिवजी, पार्वती, गवरी, शीतला माता, हनुमानजी, अम्बा को मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। इन देवी-देवताओं के साथ ये परम्परागत अग्नि, पृथ्वी, इन्द्र आदि देवताओं के प्रति भी श्रद्धा भाव रखते हैं।

वनों में रहने और विभिन्न प्राकृतिक प्रकोपों से सतत संघर्षशील रहने के कारण इनके मानस में प्राकृतिक शक्तियों से भी भय की भावना बन गई है। भीषण वर्षा, बादलों की गर्जना, आंधी और अकाल के डर कर उन्होंने अनेक बार इन प्राकृतिक आपदाओं को दूर करने के लिए कई काल्पनिक देवी-देवताओं की मनौतियों की और इन आपत्तियों के गुजर जाने के पश्चात स्थायी रूप से उन काल्पनिक देवी-देवताओं को अपना विश्वास सौंप दिया।

भील और गरासिया दोनों जातियों के आदिवासी मुख्यत: घोड़ा बावसी जिन्हें देवरा बावसी भी कहा जाता है, को मानते हैं। किसी चबूतरे पर मिट्टी के बने हुए कई घोड़े आज भी देखे जा सकते हैं। किसी विपत्ति के समय ये लोग उस स्थान पर जाकर मनौती करते हैं और मनौती पूरी हो जाने पर उस स्थान पर बलि इत्यादि चढ़ाकर देवता को प्रसन्न करते हैं। मनौती करने वाला व्यक्ति मनौती पूरी हो जाने पर वैसा ही एक घोड़ा उस स्थान पर रख जाता है।

भील लोग कोबरिया बावसी या देवरा ठाकुर को मानते हैं। गरासियों में कोटवाली माता, बावसी का देवरा (मन्दिर), माताजी बावसी, ऐकल माता, माता सौउड़ आदि देवी-देवता लोकप्रिय हैं। महादेव की मूर्ति को ये लोग पवित्र मानते हैं और नारियल चूरमे का भोग चढ़ाते हैं। स्त्रियों का शिव मन्दिर में प्रवेश वर्जित माना जाता है और भील तो शिवजी के अनन्य भक्त होते ही हैं क्योंकि ये अपने आप को उन्हीं के पुत्र से उत्पन्न समझते हैं। नागदेव, वीरजी आदि में भी भील श्रद्धा रखते हैं। देवी को भैंसे, पाड़े और बकरे की बलि देना भी भील बहुत बड़ा धार्मिक कृत्य समझते हैं।

इन आदिवासियों ने देवी-देवताओं के दो वर्ग बना लिये गए हैं। एक वर्ग को ये अच्छे देवता मानते हैं जो इन्हें विभिन्न प्रकार के लाभ पहुंचाते हैं और भले काम के लिए होते हैं। दूसरा वर्ग बुरे देवताओं का होता है जिनका उपयोग किसी को हानि पहुंचाने के लिए किया जाता है। इन देवताओं को प्रसन्न करने का तरीका मैलरी विद्या के नाम से जाना जाता है।

वीर मैलरी झोपरी :

यह एक मैला अथवा बुरा देव है। परस्पर झगड़े द्वेष इत्यादि में इसे शत्रु पक्ष के नाश हेतु शत्रु के पीछे लगा दिया जाता है। आदिवासियों को यह विश्वास होता है कि जिस किसी को जैसी भी हानि कष्ट दुख दुविधा पहुंचानी होगी यह पहुंचा देगा। इस देव पर भोपे का पूरा नियन्त्रण रहता है। ऐसा समझा जाता है कि भोपे की आज्ञानुसार यह किसी को भी वांछित हानि पहुंचा सकता है।

भोपा देवाला :

अशिक्षा के कारण आदिवासियों में कई प्रकार के विश्वास प्रचलित हैं। इन विश्वासों का लाभ इनके भोपा और देवाला उठाते हैं। भोपा वह व्यक्ति है जो किसी देवी-देवता का पुजारी होता है और एक प्रकार से उसे देवता का एजेंट माना जाता है। भोपा अपने में निश्चित दिनों पर देवता का प्रवेश करवाता है तथा अपनी माध्यम से देवता की इच्छा व्यक्त करता है जिसे ये लोग श्रद्धापूर्वक तुरन्त पूरी करते हैं। देवी-देवताओं की पूजा करने के बदले में यह भोपा प्रत्येक घर से कुछ न कुछ अनाज एवं अन्य सामग्री प्राप्त करता है।

देवाला भी भोपा की तरह एक एजेन्ट ही होता है। भोपा जहां देवी-देवताओं की पूजा करता है वहां देवाला मक्के के दानों को देखकर बीमारी की खोज करके उपचार की विधि भी बताता है। यह सारा काम पूरे विश्वास पर आधारित है इसलिए जैसा देवाला करने को कहता है वैसा आदिवासी करते हैं। बीमारी, भूत, प्रेत, डाकिन इत्यादि से मुक्ति दिलवाने के उपलक्ष्य में देवाला के आदेशानुसार ये लोग बलि के लिए बकरा, गेहूं के आटे और घी-गुड़ बनी 'भातर' (प्रसाद) इत्यादि देवता को चढ़ाते हैं। देवाला एक प्रकार से आदिवासियों का डाक्टर है।

भूत-प्रेत बाधा :

घोर विश्वासों में जकड़े होने के कारण आदिवासियों में भूत-प्रेत, डाकिन इत्यादि के अस्तित्व के साथ जादू-टोने में भी आस्था रहती है जिससे ये भयभीत रहते हैं। रोग इत्यादि में भी ये लोग इनकी भूमिका मानते हैं। किसी को भूत-प्रेत का प्रकोप है तो उसे चिकित्सालय पहुंचाकर सही इलाज करवाने के स्थान पर भोपा अथवा देवाला को बतायेंगे जो अपने में देवता अथवा भूत का प्रवेश करवाकर सिर धुनते हुए अथवा अनाज के दाने देखकर उपाय बतलाकर जादू-टोने अथवा जड़ी-बूटियों से इलाज करते हैं। इनको कई प्रकार की दुर्लभ जड़ी-बूटियों की पहचान होती है। यदि आयुर्वेद विभाग द्वारा इनके अनुभव का लाभ उठाया जाय जो निसन्देह मानवता के लिए वह कल्याणकारी सिद्ध होगा।

गीतांजली में हाई-रिस्क रोगियों को मिला जीवनदान

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर के कैंसर सेंटर एवं नेफ्रोलॉजी विभाग में डॉक्टर्स की व्यापक टीम द्वारा कैंसर व किडनी के हाई रिस्क रोगियों का निरंतर उपचार किया जा रहा है। उपचार के दौरान कोरोना से सम्बंधित सभी नियमों का पालन गंभीरता से किया जा रहा है।

हाल ही में चार कैंसर व किडनी रोग के हाई रिस्क रोगियों का सफलतापूर्वक उपचार किया गया। इस हाई-रिस्क इलाज को सफल बनाने वाली टीम में कैंसर सर्जन डॉ. आशीष जाखेटिया, डॉ. अरुण पांडेय, नेफ्रोलोजिस्ट डॉ. जी. के. मुखिया, डॉ. सूरजकुमार गुप्ता, एनेस्थीसिया विभाग से डॉ. नवीन पाटीदार, आई.सी.यू इन्चार्ज डॉ. संजय पालीवाल व आई.सी.यू स्टाफ, ओ. टी. स्टाफ आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

डॉ. आशीष ने बताया कि यहाँ आने वाले हाई-रिस्क रोगियों का सभी सुविधाओं के चलते निरंतर इलाज किया जाता है। यहाँ सभी मल्टी-सुपरस्पेशिलिटी विभाग समन्वय के साथ काम करते हैं जिससे कि जटिल से जटिल इलाज को भी सफलतापूर्वक अंजाम दिया जाता है।

मृत्युशैय्या पर कविता से प्राणांत

मेवाड़ के महाराणा अरिसंह के वक्त मेवाड़ में जबरदस्त गृह कलह था। देवगढ़ के रावत राघोदास के कहने से माधोराव सिंधिया इसमें शामिल हो मेवाड़ पर चढ़ाई करने चल दिये। मेवाड़ के सभी सरदारों व मुसाहिबों ने सलाह कर उज्जैन में माधोराव सिंधिया से मुकाबला करने की ठानी। सिंधिया के पास 35 हजार सैनिक थे। उसके मुकाबले मेवाड़ की फौज बहुत छोटी थी पर मेवाड़ वालों ने शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह के नेतृत्व में मरने-मारने की ठान ली।

मेवाड़ की सेना ने केसरिया वस्त्र धारण कर, पगड़ियों में तुलसी पत्ता दबा, रूद्राक्ष ले, भुजाओं पर गायत्री मन्त्र बांध अपने घोड़े मराठा सेना पर दौड़ा दिये। जबरदस्त युद्ध हुआ। यद्ध में मराठों के पैर उखड़ गए।

मेवाड़ की सेना उज्जैन शहर में घुस गई, तभी जयपुर से कोई दस हजार नागा संन्यासियों की सेना आ गई और मेवाड़ की सेना पर टूट पड़ी। मेवाड़ी सेना खूब लड़ी। इसके प्रधान राजा उम्मेदसिंह शत्रुओं को मौत की नींद सुलाते अचेतावस्था में पड़े थे तभी रावत राघोदास की नजर उन पर पड़ी। इस युद्ध में दोनों एक-दूसरे के दुश्मन थे किन्तु आपस में काका-भतीजा थे।

राघोदास ने उन्हें थोड़ा अफीम देने की सोची ताकि मरते वक्त पीड़ा थोड़ी कम हो जाएगी। इस पर उन्होंने एक अमल की छोटी डली अपने भाले की नोक पर रखकर उनके मुंह में दी। अमल की डली पेट में जाते ही उम्मेदसिंह की आंख खुली। बोले- 'भतीजे! थोड़ा पानी पिलाओ।' राघोदास डरते-डरते कटोरे में पानी लेकर उनके पास गए। उम्मेदसिंह ने पानी पिया। बोले- 'थोड़ा अमल और दे दो।' इस पर राघोदास ने तुरन्त थोड़ा अमल और दिया। उम्मेदसिंह ने अमल खाया। खाते ही उनके शरीर में थोड़ी जान आई और उठ बैठे। वे कभी अमल का सेवन नहीं करते थे जबकि उस जमाने में लगभग सभी अमल का सेवन करते थे। उनकी पीड़ा कम हुई। थोड़ी जान आते ही उन्होंने अमल के गुणों पर एक दोहा बोला-

अमल कड़ा गुण मीठड़ा,
काळी कंदळ वेस।
जो एता गुण जाणतो,
तो सैतो बाळी वेस।।

दोहा खत्म होते ही उम्मेदसिंह ने राघोदास की गोद में प्राण त्याग दिये।

यह है उस जमाने का भारतीय योद्धाओं का चरित्र। दो शत्रु युद्धभूमि में तलवारों से खेल रहे हैं और काका भतीजा कहकर आपस में बात भी कर रहे हैं। साथ में अमल की मनुहार भी चल रही है। रणभूमि में घायल क्षत-विक्षत पड़े कविताओं से मृत्यु का स्वागत करने वाले भारतीय योद्धा गले में मौत अटकने पर भी शत्रु को दोहे सुना रहे हैं।

माला का महत्त्व

माला फेरने का महत्त्व प्रत्येक धर्म-सम्प्रदाय में है। मन्दिरों में भगवान के समक्ष तथा धर्मस्थानों में नियमित रूप से अनेक व्यक्ति माला फेरने के माध्यम से अखिलेश अथवा परमपिता परमेश्वर एवं अपने मान्य देवता का स्मरण करते हैं। एक अन्य पक्ष और भी है। माला फेरने से अनेक रोगों बल्कि असाध्य रोगों का इलाज भी स्वत: होने के उदाहरण भी मिलते हैं। एक माला में 108 मनके यानी मणिये तक होते हैं।

एक उदाहरण अपना ही देना चाहूंगा। जैन होने के नाते हर परिवार का सदस्य माला फेरता है। इसमें नवकार मंत्र की माला सर्वोपरि है। कहते हैं चौईस तीर्थंकरों में प्रत्येक तीर्थंकर की माला फेरने से जुदा-जुदा फल मिलता है। खासतौर से बीमारी का शमन होता है।

बचपन में नवकार मंत्र की माला के साथ मां ने एक और माला फेरने को कहा और वह माला मैं बरसों तक फेरता रहा। बोल थे- '' ऋषभदेव रक्षा करो, शान्तिनाथ साता करो, पारसनाथ पार उतारो, दु:ख दर्द तो दूर करो।'' एक-एक मनके पर यह पूरा बोल बोलते पूरी 108 मणियों की माला फेरता था। इससे मन को सन्तोष तो होता ही था पर अभय भी बना रहता था।

लेकिन बाद की घटना अधिक उल्लेखनीय मानता हूं। मेरी सहधर्मिणी भी पूर्ण धार्मिक वृत्ति की थी। व्रत, उपवास, सामायिक आदि के साथ माला फेरने का भी संस्कारिक कर्म था। एक समय वह बीमार हुई तो ऐसी कि बहुत सारा इलाज कराने पर भी ठीक नहीं हुई। बीमारी थी सिर में कान के ऊपरी हिस्से में सुई की नोक जितनी जगह लगातार दर्द रहता था। परेशानी बढ़ने से मैं अपने मित्रों को भी इसकी जानकारी देता ताकि वे भी कोई हल निकाल सकें और मेरी परेशानी में हाथ बटा सकें।

मैं उस समय राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान में काम करता था। सलेटिया ग्राउण्ड में ऊपरी मंजिल पर उसका दफ्तर था। उसी में विद्यापीठ का केन्द्रीय कार्यालय पीठ अधिकरण चलता था। उसके पास के एक कक्ष में पंडित जनार्दनराय नागर द्वारा साप्ताहिक जनमंगल निकालने वाले प्रहलाद राय वाजपेयी बैठते थे।

उनसे एक दिन मैं यों ही किसी प्रसंग में पत्नी की बीमारी की चर्चा कर बैठा। सुनते ही उन्होंने कहा कि एकबार मुझे आप अपने घर ले चलें। मैं बोला, आज ही दोपहर में लंच में चले चलेंगे।

25 मई 1966 को मैं उन्हें अपने साथ ले गया। यह उनका मेरे घर आने का पहला अवसर था। वही महान जहां आज भी मेरा निवास है। ऊपरी मंजिल नाल चढ़ने पर जब पत्नी ने किंवाड़ खोला तो वाजपेयीजी ने पहला सवाल ही यह किया कि बाईजी अभी आप कुछ सपना देख रही थीं? पत्नी के हां कहने पर उन्होंने कहा कि प्रतिदिन एक माला पदमप्रभुजी की फेरते रहिये। ईश्वर ने चाहा तो आपको दो ही दिन में आराम पड़ जायेगा।

चाय पीकर हम ऑफिस पहुंचे। पीछे तत्काल ही पत्नी ने माला फेरनी शुरू कर दी। माला फेरकर वह उठी कि उसे बड़ा आराम महसूस हुआ। दूसरे दिन तो वह मुझे स्वस्थ ही नजर आई। कुछ दिनों बाद मैं उसे जयपुर के पास दर्शनार्थ पदमप्रभुजी नामक तीर्थस्थली पर ले गया। उसका माला फेरने का क्रम जब तक वह स्वस्थ रही चलता रहा। 17 नवम्बर 2000 को वह हम सबसे विदा हो गई तब से मैं प्रतिदिन पदमप्रभुजी की माला भी फेर रहा हूं। वाजपेयीजी की स्मरण तो मुझे कई चमत्कारिक अचम्भों की अमिट यादों का दस्तावेज ही लग रहा है।

दीवाली पर मेरा हीड़ हरणी गान

त्योहार जो भी आता, एक नई हरख, नया उत्साह, ललक, उल्लास, ताजगी और तरावट दे जाता फिर दीवाली पर तो पूरा जोश ही छलांगें मारता। घर सब कच्चे थे। उनकी लींपाई-पुताई होती। ऐन सुबह मां लीद लाने कोई तीन बजे रावले के पाइगा में ले जाती जहां कतार में मोटे ताजे घोड़े बन्धे रहते। वहीं देखे, किसी घोड़े के दोनों पिछले पांव बन्धे होते तो किसी का एक पांव। मैं एक-एक हष्टपुष्ट घोड़े को निहारता।

उनसकी टांग और पूंछ पर ध्यान केन्द्रित करता और धीरे से चकमा देकर तुरतापुरती से लीद इकट्ठी करता। घोड़े तरह-तरह के। लाल, सफेद, नीले, काले, काबरचीतरे, चिकतीदार, बून्दकीवाले, लहरीदार आदि। उनकी चौड़ी पीठें और पुष्ट पुट्ठे। सब संवरे हुए। चमक मारने वाले। जैसे तेल की मालिश से रोम-रोम भीगा हो। एक बार एक घोड़े की पूंछ की हल्कारी से मेरी आंख में घोखा पड़ गया जिससे बेचैनी बढ़ गई।

मेरे गांव में एक विधवा थी उम्रशुदा। वह कटोरी में पानी लेकर करवरी बींटी से घोखा निकालने में निपुण थी। उसने एकबार में ही मेरी आंख ठीक कर दी। वह पूरे गांव में घोखा वाली माऊ के नाम से जानी जाती थी। एक बार मेरी जिद्द पर मां भाई साहब को लीद लेने ले गई। तब घोड़े ने ऐसी लत्ती मारी कि उनके करम पर जा लगी। चांद वाला वह निशान बरसों उस घटना का साक्षी रहा।

लेकिन, तब भी दीवाली का जोश सवाया ही बना रहता। कभी मां पीली मिट्टी लेने जाती तो हम भी साथ हो जाते। ऊंडी-ऊंडी खान में छोटी सी कुदाली से मिट्टी खोद-खोद कर लाई जाती। इस मिट्टी में लीद मिलाकर घर की लींपाई की जाती। बची हुई मिट्टी के पिण्डोरे बनाकर रख दिये जाते। पुता-लीपा मकान ऐसा लगता जैसे जगमगा रहा है। एक अजीब अनूठी सौंधी खुशबू मगन, मस्त कर देती। अध सूखे आंगन पर जौ, गेहूं, उड़द, मूंग के दाने बिखेर देते शुभ-मंगल के लिए। फिर मां भांत-भांत के माण्डने माण्डती। ये माण्डने ऐसे फबते जैसे पूरा घर मुलक पड़ता। यह सब दीवाली से पूर्व उसके स्वागत की तैयारी थी।

शाम को झाबका पड़ते वक्त दोस्तों के साथ तो कभी अकेला ही हीड़ गाने निकल पड़ता। हीड़ एक बड़ा दीपक होता जिसकी बाट बड़ी-मोटी होती। घर-घर जाकर हीड़ गाते। कोई हीड़ में तेल पूरता, कोई तेल में फोंतर्‌या डालता। यह फोंतर्‌या सिक्का होता। इसे पाई या पईसा कहते। ऐसे एक आने में बारह पैसे होते। सौलह आने का एक रूपया होता। इस पाई से वजनी एक मोटी पाई होती जो भीलाड़ी पाई कहलाती।

हरणी अथवा लोवड़ी के कई तरह के गीत होते। इनसे कई तरह की जानकारी और मनोरंजन मिलता। समभाव, हेलमेल बढ़ता। संगठन को सम्बल मिलता। आत्मानुशासन की भावना फलती। मौसमी फसल की पहचान बनती। भावात्मक एकता के सूत्र मजबूत होते। एक गीत के कड़ावों में कहा गया कि गुठली यहां बोई। पैदाइश मालवे हुई। डाल गुजरात गई। फल द्वारिका लगे। स्वाद बद्रीनाथ ने लिया-

'आम्बो निपज्यो भाई मालवे रे /
डाल गई गुजरात /
फल लागा भाई दुवारका रे /
खाग्यो बदरीनाथ।'

कोई पूरा गीत सुनने को कहता तो कोई गीत के साथ नाच का ठुमका भरने को बोलता। फरमाइश पूरी करने पर एक के बजाय दो पैसे, एक के बजाय दो पली तेल मिलता। हम यह सब पाकर धन्य हो जाते। दूसरे दिन फिर अच्छी तैयारी करते। मां से गीत के बोल सीखते। जीजां से पूछते। कई गीत-पंक्तियों में जो मजा देने वाली शब्दावली आती उसे बार-बार बोलकर भाव निकालते। हंसते, खूब खिलखिलाते। यथा-

'बदरीनाथ का कोट कांगरा रे /
चित्तौड़यो कुमार /
चीतो आयो सांकड़े रे /
नार धड़ूका ले।'

इसमें चीता और नार यानी शेर का भेद समझते। दोनों की प्रकृति, पहचान और चालाकी के किस्से सुनते। फिर 'नार' के धड़ूकों को गर्जना के साथ व्यक्त करते। मुंह पर मुट्ठी देकर जोर की गर्जन करते। ऐसे गीतों में सब मजे लेते। एक दिन मेरी छोटी बहिन भी मचल पड़ी। मां से बोली कि उसे भी गीत याद करायें। वह भी दीवाली गाने जाएगी। तब मां ने उसके लिए छोटी सी छेद वाली मटकी मंगा दी। वह घुड़ल्या था। उसे घुड़ल्या का गीत याद कराया। मटकी में दीप संजोया। कौड़ी वाली चूमरी उसके सिर पर रखी और ऊपर छेदों से चमक उठा प्रकाश घुड़ल्या मटकी से। गीत में 'घुड़ल्यो म्हारो लाड़लो' और 'घुड़ल्या रे घुड़ल्या कठे चाल्यो' ये दो गीत उसने बखूबी याद किये। दो सहेलियों के साथ उसने कई बार इस गीत को नृत्य के साथ मांजा। इस दूसरे वाले गीत में 'पल्ले बांधी ऊंदरी स्यूं करती जा रे भाई / हाथे बांध्यो मूसलो धम-धम करतो जा रे भाई' पंक्तियों पर मां ने उन बालिकाओं को बड़ा उम्दा भावाभिनय बताया।

चुहियों के छोटे-छोटे बच्चे बड़े ही सुहावने और प्यारे लगते हैं जब उनकी आंख नहीं खुली होती है तब वे बहुत धीमे से स्यूं-स्यूं की आवाज देना शुरू कर देते हैं। यह भावरूप दिन को बताया और संध्या को सफाई के दौरान पेटी में से कपड़ों की कतरनों के बीच चुहिया और उसके चार बच्चे निकले। चुहिया तो उछल कर भाग गई पर बच्चों की आंखें मूंदी थी। मां ने उनकी पूंछ पकड़-पकड़ उन्हें लटकाते हुए हमें बताया और कहा- 'देखो बच्चे पूंछ के बल कैसे झूला भरते हैं।' कोई पांच दशक पुरानी ये सब यादें हर दीवाली पर ताजी हो मुझे उस माहौल में ले चलती हैं जब गांव की मौज और मजे वाली जिन्दगी में हमारा बचपन बीत रहा था पर भीतर से मां बड़ी टूटन लिए वैधव्य का आंकड़-बांकड़ जीवन जी रही थी जिसका हमें कुछ अतापता नहीं देना चाह रही थी। आज तो ये सब कारक स्मृति शेष से हुए लगते हैं। वह हरणी, वह गांव, वह घर, वह दीवाली, घुड़ल्या नजर नहीं आता। लगता है नई शताब्दी तक आते-बाते वह हरणी सब कुछ हर ले गई है।

-म. भा.

महिंद्रा फर्स्ट च्वाइस व्हील्स द्वारा भारत में 50 नए आधुनिक फ्रेंचाइजी स्टोरों का उद्घाटन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। महिंद्रा फर्स्ट च्वाइस व्हील्स लि. (एमएफसीडब्ल्यूएल) ने भारत के सभी टियर 1/2/3 शहरों में 50 नए फ्रेंचाइजी स्टोर खोले हैं।

महिंद्रा फर्स्ट च्वाइस व्हील्स लि. के सी.ई.ओ आशुतोष पांडे ने कहा कि इन नए स्टोरों के खुलने से एमएफसीडब्ल्यूएल ने प्री-ओंड कारों के संगठित सेगमेंट में अपनी जगह मजबूत बनाई है। मौजूदा महामारी की वजह से अर्थव्यवस्था में मंदी के बावजूद एमएफसीडब्ल्यूएल लगातार आगे बढ़ रही है और उसने ग्राहकों से अच्छी मांग की वजह से अपने स्टोर नेटवर्क का विस्तार किया है जो स्वास्थ्य और सुरक्षा चिंताओं की वजह से सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करने के बजाय अपने स्वयं के वाहन से आना-जाना पसंद करते हैं। राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, पंजाब, केरल, तमिलनाडु ऐसे राज्य हैं जिन्होंने नए एमएफसीडब्ल्यूएल स्टोर जोड़े हैं।

विनय इलेक्ट्रिकल सोलुशंस शोरूम का शुभारंभ

उदयपुर (विज्ञप्ति)। विनय इलेक्ट्रिकल सोलुशंस ने ब्राइटिका इलेक्ट्रिक कॉसेप्ट के साथ सहयोग में अपना नया शोरूम शुरू किया है। उत्तर पश्चिम क्षेत्र में अपनी इलेक्ट्रिकल जड़े मजबूत कर इस विशेष शोरूम में होम आटोमेशन, वाइरिंग उपकरणों, वायर्स एवं केबल्स, एलईडी लाइटिंग सोलुशंस, स्विचगेयर्स इत्यादि की एक अनोखी एवं प्रौद्योगिकी उन्नत उत्पाद रेंज को प्रदर्शित किया गया है।

विनय इलेक्ट्रिकल सोलुशंस के निदेशक समीर गाला ने कहा कि ग्राहक आरएफ आधारित असाधारण होम आटोमेटेड उत्पादों तथा स्मार्ट गैस सेंसर की छान-बीन एवं अनुभव कर सकते है, जो सुरक्षित है तथा उनके घरों के लिए एक स्मार्ट पसंद बनते है।

निसान मैग्नाइट बी-एसयूवी का अनावरण

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निसान इंडिया ने अपनी बहुप्रतीक्षित बी-एसयूवी ऑल न्यू निसान मैग्नाइट का अनावरण किया। यह भारतीय बाज़ार के लिए निसान नेक्स्ट रणनीति के तहत दर्शाया गया कंपनी का पहला उत्पाद है और इसे वित्त वर्ष 2020-21 की दूसरी छमाही में पेश किया जाएगा।

साइनन ओज़कोक, प्रेसीडेंट, निसान मोटर इंडिया ने कहा कि शानदार उत्पाद एवं टेक्नोलॉजी पेश कर लोगों को सशक्त बनाने के उद्देश्य वाले 'निसान-नेस' सिद्धांत को वास्तविक तौर पर दर्शाने वाली ऑल न्यू निसान मैग्नाइट का एक वर्चुअल इवेंट में वैश्विक दर्शकों के लिए अनावरण किया गया। अफ्रीका, पश्चिमी एशिया और भारत निसान के नेतृत्व से मुख्य प्रवक्ताओं ने यह लाइवस्ट्रीम इवेंट पेश किया जिसमें राकेश श्रीवास्तव, मैनेजिंग डायरेक्टर, निसान मोटर इंडिया स्वयं ऑल न्यू निसान मैग्नाइट चलाकर पहुंचे।

अर्बन - 95 प्रोजेक्ट का फर्स्ट फेज पूरा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। नगर निगम उदयपुर, बर्नार्ड वैन लिएर फाउंडेशन तथा इकली साउथ एशिया द्वारा शहर में क्रियान्वित किए गए अर्बन 95 प्रोजेक्ट के फर्स्ट फेज का समापन ऑनलाइन वेबिनार के माध्यम से किया गया। प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य 5 साल तक की उम्र वाले बच्चों एवं उनके केयरगीवर्स के लिए शहरी स्तर पर जरूरी सुविधाओं का एक स्वरूप तैयार करना था। इसके तहत विद्याभवन प्री-प्राइमरी स्कूल के सामने सड़क पर किया गया 'ट्राफिक कॉमिंग मेजर्स' बनाए, नाइयों की तलाई चौक में बच्चों के विकास की पेंटिंग तथा मीरा पार्क में काम करवाया।

एंड्रॉइड पर खाताबुक का 'माईस्टोर' ऐप लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। फिनटेक स्टार्ट-ऐप में से एक खाताबुक ने एंड्रॉइड पर 'माईस्टोर' ऐप लॉन्च किया है। ऐप की साइन-अप प्रक्रिया बेहद आसान है। इस कारण व्यापारी महज़ 15 सेकंड में अपने बिज़नेस को ऑनलाइन ला सकते हैं। खाताबुक के सह-संस्थापक और सीईओ रवीश नरेश ने कहा कि खाताबुक का 'माईस्टोर' ऐप 13 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। इस ऐप से व्यापारी सोशल डिस्टेंसिंग बरकरार रखते हुए भी अपना बिज़नेस जारी रख सकते हैं। अभी तक भारत के 25 लाख से ज़्यादा व्यापारी माईस्टोर ऐप डाउनलोड कर चुके हैं।

ऑनलाइन होगी ओलिंपियाड परीक्षा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन (एसओएफ) ने घोषणा की कि ओलंपियाड परीक्षाएं वर्तमान शैक्षणिक वर्ष के दौरान ऑनलाइन आयोजित की जाएंगी। साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन के संस्थापक निदेशक महाबीर सिंह ने कहा कि छात्रों की सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी चिंता को सर्वोपरि मानते हुए सभी छात्र अपने घरों से एसओएफ ओलंपियाड परीक्षा में उपस्थित हो सकेंगे। हर साल भारत और अन्य देशों के लाखों छात्र एसओएफ ओलंपियाड परीक्षाओं में शामिल होते हैं। पिछले साल, उदयपुर से लगभग 24000 छात्रों ने कक्षा एक से बारह तक परीक्षा दी थी।

जेके टायर को 167 करोड़ का लाभ

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जेके टायर एण्ड इण्ड्रीज लि. ने चालू वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही के परिणामों की घोषणा की। कम्पनी ने 2290 करोड़ रूपये की बिक्री अर्जित की हैं, जबकि संचालन लाभ 368 करोड़ रूपये एवं कराधान पूर्व लाभ 167 करोड़ रूपये का रहा है। कम्पनी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि उक्त तिमाही में विशेष रूप से आटोमोटिव सेक्टर में आर्थिक रिकवरी वापस आने के कारण जेके टायर ने उच्च बिक्री प्राप्त की है। निर्यात मोर्चे पर नये प्रयासों के परिणामस्वरूप कम्पनी ने 337 करोड़ रूपये की उच्च निर्यात बिक्री दर्ज की है।

कोटक और ऐमज़ॉन में साझेदारी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोटक महिन्द्रा बैंक (कोटक) ने फेस्टिव दिवाली सेल के लिए ऐमज़ॉन डॉट इन से साझेदारी की घोषणा की है। पुनीत कपूर प्रेसिडेंट प्रोडक्ट्स, ऑल्टरनेट चैनल्स व कस्टमर ऐक्सपीरियेंस डिलिवरी, कोटक महिन्द्रा बैंक लि. कहा कि इसके तहत 4 नवंबर तक कोटक डेबिट व क्रेडिट कार्डधारकों को ऐमज़ॉन डॉट इन पर 10 प्रतिशत की छूट मिलेगी। आकर्षक ईएमआई और नो-कॉस्ट ईएमआई ऑफर भी उपलब्ध रहेंगे। यह ऑफर कोटक के वार्षिक फेस्टिव सीज़न जश्न खुशी का सीज़न का हिस्सा है। इसके अलावा, बोनस कैशबैक ऑफर के तौर पर ग्राहक 1500 रूपये के एक अतिरिक्त ऐमज़ॉन पे कैशबैक के पात्र होंगे। इस हेतु ऑफर की अवधि में 30,000 रूपये की एक साथ खरीददारी करनी होगी।

न्यू टाइड फ्रेश एंड क्लीन लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारत में अग्रणी फैब्रिक केयर ब्रांड्स में शुमार पी एंड जी के टाइड ने हाल ही में अपने मौजूदा प्रॉडक्ट्स के एक नए संयोजन के रूप में टाइड फ्रेश एंड क्लीन को लॉन्च किया है।

यह नया और क्रांतिकारी उत्पाद 3 इन 1 फायदे देता है- यह कपड़ों के जिद्दी मैल से लड़ता है, धोने के बाद एक उत्कृष्ट ताजगी प्रदान करता है और बजट के अनुकूल भी है। प्रॉडक्ट को सीमित बाजारों में लॉन्च किया गया है और यह दो साइजों - 500 ग्राम 35 रुपये और 1 किलो 69 रुपये में उपलब्ध होगा। पहली बार टाइड पैक नारंगी के बजाय पीले रंग में पैक होगा। नया टाइड फ्रेश एंड क्लीन का पैक ताजे नींबुओं की ताजगी से भरपूर है। टाइड ने इस नए वैरिएंट को अभिनेता संजय मिश्रा और अभिनेत्री आयशा रज़ा अभिनीत एक ब्रांड फिल्म के साथ लॉन्च किया। नई टाइड फ्रेश एंड क्लीन एड फिल्म को हल्के-फुल्के मजाकिया अंदाज में शूट किया गया है।

मंगलम प्रोमैक्स लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। प्रीमियम सीमेंट 'मंगलम प्रोमैक्स' का अनावरण सीमेंट निर्माता कंपनी मंगलम सीमेंट लि. द्वारा एक वर्चुअल ऑनलाइन इवेंट के जरिये किया गया। पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की श्रृंखला आगे बढ़ाते हुए कंपनी ने देश में संभवतया पहली बार पर्यावरण के अनुकूल प्रीमियम सीमेंट 'मंगलम प्रोमैक्स' को एक ऑनलाइन वर्चुअल मेगा लॉच इवेंट के जरिये कंपनी के सेल्स प्रमोटर्स, डीलर्स तथा देश के अग्रणी आर्किटेक्ट्स की वर्चुअल उपस्थिति में एक स्वस्थ्य और सुरक्षित राष्ट्र के निर्माण के लिए देश को समर्पित किया।

एचडीएफसी बैंक को 18.4 प्रतिशत का मुनाफा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक ने सितंबर तिमाही में अपने मुनाफे में 18.4 फीसदी की ग्रोथ हासिल की है। 30 सितंबर को समाप्त तिमाही में कंपनी का मुनाफा सालाना आधार पर 18.4 फीसदी बढ़त के साथ 7513.11 करोड़ रुपए रहा है। बैंक की ब्याज आय सालाना आधार पर 16.7 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 15,776.4 करोड़ रुपए रही है। दूसरी तिमाही में बैंक के असेट क्वालिटी में भी सुधार देखने को मिला है। दूसरी तिमाही में बैंक का ग्रॉस एनपीए तिमाही आधार पर 1.08 फीसदी घटा है, जबकि बैंक के नेट एनपीए में 0.17 फीसदी की गिरावट देखने को मिली है।

द बिग बिलियन डेज़ 2020 संपन्न

उदयपुर (विज्ञप्ति)। फ्लिपकार्ट की द बिग बिलियन डेज़ 2020 ने ग्राहकों में खरीदारी की भावना बढ़ाने और स्थानीय एमएसएमई के विकास को बढ़ावा देने में ई-कॉमर्स के योगदान को फिर से साबित किया। बिग बिलियन डेज़ ने विक्रेताओं के अटूट जुनून और उद्यमशीलता को सबके सामने प्रदर्शित किया। विक्रेताओं ने भारतीय ग्राहकों तक त्योहार की खुशियां पहुंचाने के लिए डिजिटल कॉमर्स को अपनाया। इसने भागीदारी की ताकत को प्रदर्शित किया कि कैसे ब्रैंड्स और किराना ने आपस में मिलकर न केवल ग्राहकों की ज़रूरतों को पूरा किया बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा किए।

फ्लिपकार्ट में कस्टमर ग्रोथ एंड एंगेजमेंट की वाइस प्रेसिडेंट, नंदिता सिन्हा ने कहा कि इस त्योहारी सीज़न में फ्लिपकार्ट का उद्देश्य समुदाय की ताकत को फिर से बहाल करने का था। ग्राहकों से मिली ज़बरदस्त प्रतिक्रिया से वैल्यू चेन से जुड़े सभी लोगों को रिकवरी की शुरुआत का संकेत मिला है।

फिनोवेशन और सैंडविक में पार्टनरशिप

उदयपुर (विज्ञप्ति)। टेक्निकल रिसर्च एजेंसी इनोवेटिव फाइनेंशियल एडवाइजर्स प्रा. लि. (फिनोवेशन) ने फायटोरमीडिएशन आधारित खनन परियोजना के लिए सैंडविक माइनिंग एंड रॉक टेक्नोलॉजी प्रा. लि. से हाथ मिलाया है। यह भागीदारी उन परियोजनाओं में क्रियान्वित होगी जो उदयपुर व राजसमंद में संचालित होंगी। इसमें 2030 तक फाइटोरमीडिएशन की प्रक्रिया का लाभ उठाकर कार्बन फुटप्रिंट को कम करना है। फिनोवेशन अर्पण सेवा संस्थान के साथ मिलकर ऑनग्राउंड एक्टिविटी को मैनेज करेगा व परियोजना के लिए टेक्निकल असिस्टेंस प्रदान करेगा। अर्पण सेवा के अध्यक्ष डॉ. सुभकरन सिंह ने कहा कि टारगेट एरिया में डंपिंग यार्ड के पास 20 हैक्टेयर में 50,000 पौधों का रोपण फाइटोरमीडिएशन की प्रक्रिया में मदद करेगा। मिट्टी, हवा और दूषित पदार्थों को नष्ट करने में सहायता करेगा।

प्रधानमंत्री द्वारा गिरनार रोपवे का उद्घाटन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जूनागढ़ में गिरनार रोपवे परियोजना का उद्घाटन किया। इस रोपवे से सौराष्ट्र में पर्यटन और संबंधित क्षेत्रों में विकास को गति मिलेगी। 2.3 किमी का गिरनार रोपवे दुनिया में मंदिर के लिए सबसे लंबा रोपवे है जिसे यात्री रोपवे के अग्रणी उषा ब्रेको लि. द्वारा 130 करोड़ के निवेश के साथ विकसित किया गया है। उद्घाटन अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपानी, उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल, वरिष्ठ मंत्री और उषा ब्रेको के अध्यक्ष प्रशांत झवर गिरनार में उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह विश्वस्तरीय रोपवे लोगों के लिए गिरनार की यात्रा को सुविधाजनक बनाएगा। पहले गिरनार पर चढ़ने में 5-7 घंटे लगते थे लेकिन रोपवे की सहायता से केवल 7-8 मिनट ही लगेंगे। इससे ज्यादा संख्या में भक्त और पर्यटक गिरनार की यात्रा कर सकेंगे।

गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपानी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने अष्टमी के शुभ अवसर पर रोपवे का उद्घाटन किया है। वरिष्ठ नागरिक, बच्चे, महिलाएं और अन्य जो पहले गिरनार जाने में सक्षम नहीं थे, वे विश्वस्तरीय रोपवे के माध्यम से वहां जा सकेंगे। वर्षों से गिरनार के मंदिरों में लाखों लोगों को ले जाने वाले डोलीवालों का मैं आभार व्यक्त करता हूं। उषा ब्रेको के प्रबंध निदेशक अपूर्व झवर ने कहा कि गिरनार रोपवे देश के सबसे आधुनिक यात्री रोपवे में से एक है और इसमें नौ टॉवर शामिल हैं। इसमें कांच के फर्श वाले केबिन सहित 25 केबिन में एक समय में आठ यात्रियों को ले जाने की क्षमता है। गिरनार रोपवे एक घंटे में 800 और एक दिन में 8,000 लोगों की फेरी लगा सकेगा। उषा ब्रेको देश में यात्री रोपवे का अग्रणी है। यह हरिद्वार में मां चंडीदेवी, गुजरात में पावागढ़ और अंबाजी, केरल में जटायुपुरा और मालमपुझा और ओडिशा में मां तारातारिणी में संचालित करता है।

दरीबा इकाई को वाटर ऑप्टिमाइजेशन अवार्ड

उदयपुर (विज्ञप्ति)। हिन्दुस्तान ज़िंक लि. के दरिबा स्मैल्टिंग कॉम्पलेक्स (डीएससी) स्थित कैप्टिव पावर प्लांट (सीपीपी) को 500 मेगावाट से कम क्षमता वाले संयंत्रों की श्रेणी में पानी का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने वाले प्लांट के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह प्लांट जल प्रबंधन और संरक्षण हेतु निरंतर प्रयासरत है तथा एसटीपी वाटर का इस्तेमाल करते हुए यह पानी की कम से कम खपत करता है। यह पुरस्कार मिशन ऐनर्जी फाउंडेशन द्वारा वाटर ऑप्टिमाइज़ेशन 2020 अवार्ड्स में प्रदान किया गया।

हिन्दुस्तान ज़िंक के सीईओ अरुण मिश्रा ने कहा कि जल प्रबंधन के लिए हमारा सतत् दृष्टिकोण रहता है। पानी की ज्यादा से ज्यादा रिसाइकलिंग और ज़ीरो डिस्चार्ज कायम रखने के लिए हम विविध एवं अभिनव तकनीकों को अमल में लाते हैं। हमने शहर के वाटर का ट्रीटमेंट करने की भी व्यवस्था की है, फिर साफ किए गए पानी का इस्तेमाल औद्योगिक कार्यों तथा भूजल के पुनर्भरण के लिए किया जाता है। यह पुरस्कार इस बात का परिचायक है कि कंपनी जल को संरक्षित करने तथा जल प्रबंधन हेतु समर्पित होकर प्रयास कर रही है।

ज़ी एंटरटेनमेंट द्वारा 20 एम्बुलैंस, 4000 पीपीई किट्स भेंट

उदयपुर (विज्ञप्ति)। ज़ी एंटरटेनमेंट इंटरप्राइजेज लि. (ज़ी) ने कोविड-19 के खिलाफ राष्ट्रीय स्तर के सीएसआर अभियान के तहत 20 एम्बुलैंस, 4000 पीपीई किट भेंट किये। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की उपस्थिति में एम्बुलैंसेस राज्य सरकार को सौंपी गई। इसके अलावा जी द्वारा प्रवासियों और दिहाड़ी मजदूरों को 50000 दैनिक भोजन पैकेट वितरित किये जा रहे हैं।

गहलोत ने कहा कि इस महामारी के दौरान प्रशासन ने स्वास्थ्य सुविधाओं को बड़े पैमाने पर मज़बूत किया है और कोविड-19 संक्रमण के कारण एक भी व्यक्ति को अपनी जान गवानी न पड़ें इसके लिए कड़े प्रयास किये जा रहे हैं। ज़ी के मैनेजिंग डायरेक्टर और चीफ एग्ज़िक्युटिव ऑफिसर पुनीत गोएंका ने बताया कि कोविड-19 के खिलाफ ज़ी के राष्ट्रीय स्तर के सीएसआर के तहत राजस्थान सरकार के महामारी को हराने के प्रयासों को प्रबल सहयोग प्रदान करने के लिए कंपनी प्रतिबद्ध है।

सैनी इंडिया की उद्योग में एक नई शुरुआत

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सैनी इंडिया ने उद्योग में एक अनुकरणीय शुरुआत करते हुए एक नया उदाहरण स्थापित किया है। कंपनी ने अपने सहयोगियों को आसानी से कोविड-19 महामारी से पार पाने में मदद करने के लिए कई उपाय लागू किए हैं। सैनी इंडिया ने डीलर पार्टनर्स के लिए नकदी प्रवाह को बनाए रखने और बेहतर बनाने के लिए कई नई पहल लागू करके अपने सभी 35 डीलरों को चुनौतीपूर्ण दौर में मदद की।

दीपक गर्ग, मैनेजिंग डायरेक्टर, सैनी इंडिया एंड साउथ एशिया ने कहा कि महामारी के दौरान निर्माण उपकरण और उसके स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति, ग्राहकों को विस्तारित वारंटी समर्थन और 1100 से अधिक कर्मचारियों के लिए वेतन सहायता के साथ भारत और दक्षिण एशिया में डीलर के भुगतान की भूमिका के लिए सभी प्राप्तियों पर ऋण अवधि का विस्तार शामिल था। समय पर वित्तीय समर्थन के परिणामस्वरूप डीलर अपने व्यवसाय को बनाए रखने में सक्षम हुए, श्रमशक्ति को साथ बनाए रखा और जब बाजार फिर खुले तो बाजार में वापसी करने में सक्षम थे।

जहां मुझे लोककला.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

संगीत नाटक अकादमी में अध्यक्ष रमेश बोराणा ने राजस्थानी लोकवाद्यों का अद्वितीय एवं अलभ्य संग्रहालय बनाया।

विश्वविद्यालयों में लोककलाओं पर सेमीनार, संगोष्ठियां, समारोह शुरू हुए। पाठ्य पुस्तकों में इन्हें सम्मिलित किया गया। शोधकार्य प्रारम्भ हुए। नये-नये विषय ढूंढ़े जाने लगे। साहित्य के अलावा संगीत, इतिहास, गृहविज्ञान, समाजशास्त्र, चित्रकला जैसे विभाग भी लोकजीवन की धड़कनों और धमनियों की सुध लेने लगे।

ऐसे पांच सौ से अधिक शोधप्रबंध और लघु शोधप्रबंध लिखे गये जो अजूबा राजस्थान के शत-सहस्त्र लोकरंगों का उकेरण प्रस्तुत करते हैं। यहीं से लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, रंगयोग, रंगायन जैसी पत्रिकाएं निकाली गई। लोककला विषयक प्रकाशनों की सूची दांतों तले उंगली दबाने जैसी है। दो सौ के ऊपर तो राजस्थानी लोकगीतों की पोथियां ही मिल जायेंगी। लोककलाओं की संस्थाएं भी जितनी यहां हैं, अन्यत्र नहीं हैं। रानी लक्ष्मीकुारी चूण्डावत तथा कोमल कोठारी जैसे सिद्ध लोककलाविद् इसी भूमि की देन हैं जो लोककलाओं के भोमिया के रूप में सर्वत्र समादरणीय बने हैं।

लोककला संस्कृति को उजलास देने के लिए स्थापित पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर और जवाहर कला केन्द्र, जयपुर हमारे गौरव स्तंभ हैं। पारम्परिक एवं विलुप्त होती जा रही कलाओं की खोज, उनका संरक्षण एवं संवर्द्धन करने तथा उन्हें जनाश्रयी बनाने और समन्वित विकास करने के लिए जवाहर कला केन्द्र की स्थापना की गई। राजस्थान की कला और कलाकारों की उन्नत पहचान बनाने के लिए देश में स्थापित सात सांस्कृतिक केन्द्रों में से तीन का सदस्य राजस्थान है। हस्तशिल्पियों के संरक्षण के लिए तथा लोककलाओं के पुनरूत्थान की दृष्टि से शिल्पग्राम दूर-सुदूर तक जाना जाता है।

राज्य के पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग ने लोककला की सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण एवं यादगार बनाये रखने के लिए पारम्परिक मेलों के नवीनीकरण के साथ कुछ नये मेले-उत्सव प्रारम्भ किये, जैसे ऊंट उत्सव (बीकानेर), मरु उत्सव (जैसलमेर), हाथी उत्सव (जयपुर), मेवाड़ उत्सव (उदयपुर), मारवाड़ उत्सव (जोधपुर), दशहरा मेला (कोटा), पुष्कर मेला (अजमेर) आदि। यही नहीं, पर्यटन विकास निगम द्वारा जगह-जगह जो ठहर-स्थल बनाये गए, उनके नाम भी बड़े कलात्मक, संस्कृतिनिष्ठ और आंचलिक किंवा स्थानीय सांस्कृतिक बोध के सूचक हैं।

इनमें- गणगौर एवं तीज (जयपुर), कजरी (उदयपुर), गवरी (ऋषभदेव), मूमल एवं सम ढाणी (जैसलमेर), गोकुल (नाथद्वारा), खादिम (अजमेर), घूमर (जोधपुर), चंबल (कोटा), ढोलामारू (बीकानेर), कामधेनु एवं झूमर बावड़ी (सवाई माधोपुर), हवेली (फ्तहपुर), चंद्रावती (झालावाड़) प्रमुख हैं। राज्य के सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय द्वारा प्रकाशित द्वैमासिक 'राजस्थान सुजस' राजस्थान का ऐसा मुंह बोलता आईना है जिसके माध्यम से कला, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व, पर्यटन, नीति, शिक्षा, राजनीति, समाज, धर्म, अध्यात्म आदि से संबंधित लबालब रंग-सामग्री का सुयश बांचा जा रहा है। इसकी सब ओर अपनी अनुपम ओळखाण बनी है।

अभी हमें आजाद हुए बहुत अधिक समय नहीं हुआ है तो बहुत कुछ होने का सिलसिला समाप्त भी नहीं हुआ है। कई सारी चुनौतियां अपनी स्वयं की, अंदर की और बाहर की भी मुंह बांयें निरन्तर घोष दे रही हैं। जो कलाएं हमारे देखते-देखते मरी-अधमरी-सी हो गईं उनके अस्तित्व को बचाना है। टेलीविजन के विजन द्वारा लोककलाओं की पंगुता को रोकना है।

सिनेमा के नाम दिखाये जा रहे पर्दे की विद्रूपता को ताजा और स्वच्छ दर्पण देना है। कुकुरमुक्ता की तरह पनप रही जयचंदों की खरपतवार को खड्ग दिखानी है और हरिचंद के सांचे मूल्यों तथा हंसों के पारदर्शी मोतियों को मुलकाना है। यह समय निष्कर्ष का नहीं, लगातार उत्कर्ष का है।

मेरा यह सौभाग्य कहिये कि अहोभाग्य, भारतीय लोककला मण्डल में पग-डग भरते ही मुझे वहां के कण-कण ने लोककला की रसवंती रज से रजत रतन कर दिया। देवीलाल सामरजी ने मेरी उंगली ही नहीं पकड़ी, आंख का एक-एक भांपन और पांख की एक-एक परत खोल उजाले का आलोक दिया।

सब कुछ, लोककला के नाम पर पूरे राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते कलामण्डल ने पहलीबार जो कुछ शिविर, समारोह, रंजन-अनुरंजनकारी मेले, संगोष्ठी, उत्सव, समारोह, दर्शन-प्रदर्शन आयोजित किये उनके साथ मुझे जोड़ते अग्रगामी योजक-संयोजक रखा और मेरे अनुभव-अध्ययन को आम्रफल देते मुझे लोककला के मधुबन का आम्बा मोरिया ही बना दिया। अब वे सब बातें स्वप्नदर्शी हो गई हैं। 30 जुलाई 1911 को उदयपुर के खैरादीवाड़ी में जन्मे सामरजी का 03 दिसंबर 1981 को निधन जैसे एक पूरे कालचक्र का ही अवसान हो गया।

सच तो यह है कि सन् 1958 से शुरू हुई मेरी यह यात्रा इस लोक के साथ तो ब्लोक होने वाली नहीं है। जो कुछ इस लोक में मैं गुन-धुन पाया उसकी धुनक की यदि किंचित मात्र भी कोई आहट दे पाया तो मेरी शताधिक पुस्तकें बोल देतीं लोककला की सौंधी-सुहानी साख भर सकेंगी।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (1)

- देवीलाल सामर -

(देवीलाल सामर ने सन् 1952 की 22 फरवरी को उदयपुर में भारतीय लोककला मण्डल की स्थापना कर कुछ कलाकारों के साथ अपनी मण्डली बना प्रदर्शन देना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में आर्थिक संकट होना स्वाभाविक था। उन्होंने बड़ी मुसीबतों, दिक्कतों तथा परेशानियों का सामना करते हुए कला मण्डल को सर्वोच्च पायदान पर पहुंचाया। देश-विदेश में प्रदर्शन दिये और विश्व कीर्तिमान तक हांसिल किये। यहां संस्था की प्रारम्भिक स्थितियों के बारे में उनके अनुभव प्रकाशित किये जा रहे हैं।)

कलकत्ता के गण्यमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाय और प्रदर्शन के समय उनसे दान प्राप्त करने का यत्न किया जाय। इस काम के लिए श्रीयुत्त भागीरथजी कानोड़िया, सीतारामजी सेक्सरिया, रामेश्वरजी टांटिया, भंवरमलजी सिंघी आदि के सहयोग की पूरी आशा थी। उन्होंने दान की एक अपील पर हस्ताक्षर भी किये। प्रदर्शन कलकत्ता के प्रसिद्ध थियेटर महाजाती सदन में हुआ। हॉल दर्शकों से खचाखच भरा था। राजस्थान के लगभग सभी प्रतिष्ठित व्यावसायिक मौजूद थे। प्रदर्शन से पूर्व हमारे प्रयास से जो राशि एकत्रित हुई थी वह नगण्य सी थी।

प्रदर्शन मौलिकता की दृष्टि से अच्छा था परन्तु मनोरंजन की दृष्टि से उसमें विशेष तत्व नहीं थे। विशेष करके हमारे राजस्थानी भाइयों की रुचि के अनुकूल हमारा प्रदर्शन नहीं था। आधा कार्यक्रम भी पूरा समाप्त नहीं हुआ कि धीरे-धीरे हॉल खाली होता गया। अंतिम आइटम तक तो हॉल में कुल मिलाकर 100 व्यक्ति भी नहीं थे। मेरा दिल तो पहले ही बैठ चुका था और अंतिम आइटम तक तो मेरा हाल बेहाल हो गया।

मेरे साथियों ने चंदे की अपील करने को कहा पर किससे निवेदन करता? हॉल तो लगभग सारा ही खाली हो चुका था। मैं प्रदर्शन समाप्त होते ही बिना किसी से मिले डेरे पर जाकर उल्टा सो गया। नींद-भोजन का तो प्रश्न ही नहीं था। सारी रात परेशानी से गुजरी। मेरे एक साथी ने कहा, मायूस होने से काम नहीं चलेगा। कानोड़ियाजी, टांटियाजी आदि से मिलकर इस गुत्थी का हल प्राप्त करना चाहिए।

मुझे यह ज्ञात था कि ये सभी लोग कलकत्ता की प्रसिद्ध झील पर प्रात: घूमने जाते हैं और एक जगह बैठकर गपशप करते हैं। मैं भी प्रात: वहां पहुंच गया। सभी लोग वहां मिल गये। सब के मन पर भयंकर उदासी थी।

उनको हमसे बड़ी-बड़ी आशाएं थीं। आमंत्रण पत्र पर उनके भी हस्ताक्षर थे इसलिए जब मैं उनसे मिला तो कहने लगे, सामरजी यह कलकत्ता है अगर आपकी तैयारी अच्छी नहीं थी तो आपको कलकत्ता नहीं आना चाहिये था। हमको भी आपके कारण बड़ी शर्मिन्दगी उठानी पड़ी।

मैं निराश होकर अपने डेरे पर लौट आया। दोपहर को भाई श्री भंवरमलजी सिंघी का टेलीफोन आया कि यहां बंगालियों का एक क्लब है। उसके सदस्य स्वयं कलाकार एवं कला-पारखी हैं। अगर आप आज रात वहां प्रदर्शन दे सकें तो पैसा तो आपको वहां से नहीं मिलेगा परन्तु प्रतिष्ठा अवश्य मिलेगी। उसके सदस्य कलकत्ता के चोटी के पत्रकार हैं। बंगाली लोग कला-पारखी होते हैं, मारवाड़ी नहीं। आपका कल वाला प्रोग्राम उन्हें अवश्य पसन्द आयेगा। मैंने उनका प्रस्ताव इसलिए भी स्वीकार कर लिया कि कम से कम निशुल्क भोजन तो मिल ही जायेगा।

प्रसिद्ध बंगाली नाट्यकार श्री तनुजराय उस क्लब के मंत्री थे। अनौपचारिक रंगमंच पर ही हमने प्रदर्शन किया परन्तु हमें खूब आनन्द आया। लगता था कि सच्चे कला-पारखियों के सामने हम प्रदर्शन दे रहे हैं। दूसरे दिन कलकत्ता के सभी अंग्रेजी, बंगाली पत्रों में हमारी तारीफें छपीं। चित्र भी छपे। मैं सूर्योदय से पूर्व ही चौराहे पर जाकर खड़ा हो गया। सभी पत्रों की प्रतियां खरीद लीं और उन्हें ले जाकर कलकत्ता झील की ओर भागा जहां चोटी के राजस्थानी सेठ जमा होते हैं।

सर्वप्रथम मेरी भेंट भागीरथजी से हुई। दूर ही से उन्होंने बधाई दी। कहा, वाह आज तो आपके बारे में अखबारों में बड़ी तारीफें छपी हैं। टाईम्स तो लिख रहा है कि ऐसा प्रदर्शन कलकत्ता में पहले कभी भी नहीं हुआ। वास्तव में देवीलालजी हम राजस्थानी कला-वला नहीं समझते हैं। भागीरथजी ने सभी साथियों को अपने पास बुलाकर अखबारों की रिपोर्टें पढ़कर सुनाई। उनमें से अधिकांश तो घर

ही से पढ़कर आये थे। उन्होंने मुझे दिन में दफ्तर में मिलने को कहा। उनके प्रयास से धन संग्रह का काम पुन: प्रारम्भ हुआ और दो ही दिन में दस-बीस हजार का चन्दा हो गया। उससे कुछ राहत मिली। उसके बाद न्यू एम्पायर तथा रोक्सी थियेटर में दो-तीन प्रदर्शन और हुए जिससे कुछ मदद मिल गई और कलकत्ता आना निरर्थक नहीं गया।

हमारे राजस्थानी भाइयों की रुचि के अनुकूल हमारा प्रदर्शन नहीं था। आधा कार्यक्रम भी पूरा समाप्त नहीं हुआ कि धीरे-धीरे हॉल खाली होता गया। अंतिम आइटम तक तो मेरा हाल बेहाल हो गया। प्रदर्शन समाप्त होते ही बिना किसी से मिले अपने डेरे पर जाकर सो गया। भंवरमलजी सिंघी का टेलीफोन आया कि बंगालियों का एक क्लब है। उसके सदस्य स्वयं कलाकार एवं कला-पारखी हैं। अगर आप आज रात वहां प्रदर्शन दे सकें तो पैसा तो आपको वहां से नहीं मिलेगा परन्तु प्रतिष्ठा अवश्य मिलेगी। मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि कम से कम निशुल्क भोजन तो मिल ही जायेगा।

'ढोलामारू' में ढोला की भूमिका में सामरजी

यह मार्च महीने की बात है। एक दिन यकायक राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीयुत्त जयनारायण व्यास का तार आया कि तार पहुंचते ही कलकत्ता के सभी प्रदर्शन छोड़कर दल-बल सहित जयपुर आ जाओ। तब तक मेरे लगभग सभी प्रदर्शन समाप्त हो चुके थे। यदि कोशिश करते तो दो-चार प्रदर्शन और हो जाते परन्तु श्रद्धेय व्यासजी का आग्रह कैसे टाल सकता था। वे स्वयं भी कलाकार थे और कलाकारों की इज्जत करना जानते थे। मैं उनका आदेश पाकर दिनांक 22 मार्च 1953 को जयपुर पहुंचा।

ट्रेन पर स्वागत के लिए स्वयं व्यासजी मय अपने अमले के मौजूद थे। पहुंचते ही मैंने पूछा, आपने मुझे क्यों याद किया। मैं अपने कई महत्त्वपूर्ण प्रदर्शन छोड़कर आया हूं। वे कहने लगे यहां 30 मार्च को राजस्थान दिवस पर प्रथम बार भारी नाट्य आयोजन करना है। वह काम आपके बिना पूरा नहीं हो सकता। पास में खड़े हुए सार्वजनिक जनसम्पर्क निदेशक श्रीयुत्त सर्वदानन्दजी को कहा कि बंगले में सारे दल की व्यवस्था कर दें। सामरजी को अलग कमरा दे दें। फिर व्यासजी ने मेरी तरफ मुखातिब होकर एक पुलिन्दा पकड़ा कर कहा कि शाम को मैं आपसे मिलूंगा तब तक आप इसे पढ़कर सारी रूपरेखा बनालें। ऐसा कहकर व्यासजी की कार वहां से खिसक गई।

बंगले पर जाकर मैंने पुलिन्दा खोला तो उसमें चम्बल नृत्यनाटिका की पूरी योजना थी। उसमें चम्बल को एक देवी के रूप में चित्रित किया गया था और राजस्थान को हराभरा रखने की सम्पूर्ण योजना थी। उसके गीत आदि स्वयं व्यासजी द्वारा रचे हुए थे। व्यासजी से मिलने से पूर्व मैं चम्बल स्क्रिप्ट का पूर्ण अध्ययन कर चुका था और दो-चार नाटिकाओं की सम्पूर्ण रूपरेखा मैंने तैयार कर ली थी।

व्यासजी शाम को अपना टिफिन केरियर भी साथ ले आये थे। उसमें मेरा भी खाना था। दिनभर के थके व्यासजी सोफे पर लेट गए और मेरी प्रतिक्रिया सुनने लगे। मैंने घण्टे भर में अपनी सारी योजना उनके सम्मुख प्रस्तुत करदी। कुछ अंश तो मैंने नाच कर भी बतला दिये।

व्यासजी अत्यधिक प्रसन्न हुए। हमने साथ में खाना खाया। कहने लगे, कल शाम तक आप सम्पूर्ण नृत्यनाटिका रचलें और उसकी तैयारी शुरू करदें। वह मेरी परीक्षा थी। मैं सारी रात नहीं सोया। दो आदमकद आइने मैंने मंगवाकर कमरे में लगवा दिये। सब साजिन्दों को अपने कमरे में बुलवा लिया और रात-दिन के कठिन परिश्रम के बाद नृत्यनाटिका का ढांचा पूरा बन गया।

सब कलाकारों के साथ रिहर्सल भी शुरू हो गई। चम्बल की भूमिका मेरे दल की प्रमुख अभिनेत्री कुमारी शशिकला को दी गई। खलासी का भार मैंने स्वयं ने लिया। शेष दायित्व मेरे दल के अन्य कलाकारों को दे दिये गये। नृत्यनाटिका में चम्बल को बांधने की योजना थी और बंध जाने के बाद उससे बिजली पैदा करने की बात थी। उसके द्वारा सिंचाई योजना पारित हुई। रेतीला राजस्थान सरजीवी हुआ। देवी चम्बल मूर्तिमान लेकर सबको आशीर्वाद देने लगी।

जब इंजीनियर की भूमिका अदा करने के लिए कोई उपयुक्त पात्र नहीं मिला तो स्वयं व्यासजी ने वह भार अपने पर उठा लिया। चार-छह दिन तक रिहर्सल में भी आते रहे परन्तु अंतिम दिन अपने अधिकारियों के परामर्श से वह काम मुझ पर छोड़ दिया।

-क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।